खंड : XIII अंक : 11 व 12 नवंबर - दिसंबर, 2001

चैतन्य लहरी

"आप यदि अभी तक पैसे या सत्ता की समस्या में, या अपनी अन्य समस्याओं में उलझे हुए हैं तो आप स्वयं एक 'समस्या' हैं, सहजयोगी नहीं। सहजयोगी तो सभी समस्याओं से ऊपर होता है और अत्यन्त शक्तिशाली। सहजयोगी शक्ति प्राप्त कर लेता है—प्रेम एवं करुणा की शक्ति। यह शक्ति प्रेम के शब्द मात्र नहीं है।"

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी)
आदिशक्ति पूजा—2001

गुरू पूजा, कबेला, 8.7.2001

1 ईस्टर पूजा, 2001

16 आदिशक्ति पूजा, 3.6.2001

26 गुरु पूजा, 8.7.2001

36 नव वर्ष पूजा, कालवे, 31.12.2000

प्रकाशक

वी.जे. नलगीरकर

162 – ए. मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक

अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड

डब्ल्यू एच एस 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15

फोन : 5447291, 5170197

सदस्यता के लिए कृपया इस पत्ते पर लिखें :–

श्री ओ.पी. चान्दना

एन – 463 ऋषि नगर, रानी बाग

दिल्ली – 110034

फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पत्ते पर भेजें :

चैतन्य लहरी

सहजयोग मंदिर

सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया

नई दिल्ली – 110016

ईस्टर पूजा

इस्तम्बूल, टर्की, 22.4.2001

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ ईस्टर पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। आध्यात्मिकता के इतिहास में यह सबसे महान दिनों में से एक है क्योंकि आज के दिन ईसा–मसीह ने मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म लिया था। सहजयोग में भी हमने मृत्यु के पश्चात् जीवन में प्रवेश किया है। यह बात समझ लेनी चाहिए कि पुनर्जन्म हम सबके लिए, पूरे विश्व के लिए, ये संदेश है कि हमें पुनरुत्थान प्राप्त करना है। ईसा–मसीह को ये सब करने की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु वे एक आदर्श थे, एक आदर्श सन्त, आदर्श साक्षात्कारी व्यक्ति, एक ऐसे व्यक्ति की प्रतिमूर्ति, जो हमारी रक्षा करने के लिए स्वर्ग से आए। अतः यह पुनरुत्थान भी हमारा ही अंग–प्रत्यंग है। ये इतना प्रतीकात्मक है, इतना अधिक प्रतीकात्मक कि चेतन अवस्था में भी हम इसमें खो जाते हैं। हमें स्वयं पर कोई नियंत्रण नहीं है, जिस तरह से हमारा मस्तिष्क बताता है वही बात हम मान लेते हैं। न हमारे अन्दर मानसिक सन्तुलन है और न ही हमारी शारीरिक आवश्यकताएं सन्तुलित हैं। किसी भी प्रकार का सन्तुलन नहीं है। जैसा हम ठीक समझते हैं बिना सोचे–समझे हम किए चले जाते हैं। यह विवेकशीलता नहीं है।

जैसा बताया है, ईसा–मसीह, श्री गणेश के अवतरण थे। एक अत्यन्त कठिन कार्य को करने के लिए वो पृथ्वी पर अवतरित हुए। आध्यात्मिकता के विषय में पूर्णतः अज्ञानी, पैसे के अतिरिक्त कुछ भी न समझने वाले लोगों को कायल करना बहुत कठिन है। वे उस समय पर अवतरित हुए जब लोगों को आध्यात्मिकता का बिल्कुल भी ज्ञान न था। परन्तु जैसे तैसे सभी कुछ इतनी सुन्दरता पूर्वक कार्यान्वित हुआ कि लोग समझने लगे कि पुनरुत्थान महत्वपूर्ण है। आपका भी जब पुनर्जन्म होता है तो कुण्डलिनी उठती है और आपका सम्बन्ध दिव्य शक्ति से जोड़ती है–दिव्य शक्ति से जो कि सर्वव्यापी है। तब आप ये समझने लगते हैं जो जीवन आप जी रहे हैं इससे परे भी कोई जीवन है। एक अन्य प्रकार का जीवन है, उच्च प्रकार का जीवन जो आपको परमेश्वरी शक्ति से जोड़ता है और तब ये परमेश्वरी शक्ति आपको पूर्ण सत्य प्रदान करती है। आप अधिकाधिक उन्नत होते हैं, पूर्ण सत्य का ज्ञान आपको हो जाता है क्योंकि अभी तक आपको इसका

ज्ञान न था इसलिए आप गलत कार्य किए चले जा रहे थे, गलत ढंग से कार्य करते थे और इन्ही में फँसकर रह जाते थे। इतना ही नहीं आप गलत लोगों की बातों को सुनते थे जिनका कार्य मात्र शेखी बघारना था और जो एक शब्द भी सत्य के विषय में नहीं कहते थे। परन्तु जब आप स्वयं सत्य को खोज़ लेते हैं तो आप बिल्कुल भिन्न व्यक्ति हो जाते हैं। ये खोज इतनी गहन और सच्ची है कि आप सारे वैमनस्य त्याग देते हैं, बड़ी आसानी से इसे त्याग देते हैं। इनसे मुक्त होना आपको कठिन नहीं लगता।

इस गोष्ठी में, जैसा आप जानते हैं, अधिकतर मुसलिम लोग थे। इस्लाम धर्म के अनुयायी जो विश्व भर में सबसे अधिक पथ भ्रष्ट हैं। उन्हें सभी प्रकार की कहानियाँ बताकर उनके मन में अन्य लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी गई है ये इस्लामिक शक्ति बद से बदतर होती चली जा रही है परन्तु लोग इसमें विश्वास करना चाहते हैं। इस इस्लामिक प्रभाव की विशेष रूप से मेरे देश में बहुत बड़ी समस्या है। ये लोग इस्लाम के समीप भी नहीं हैं और मोहम्मद साहब से तो उन्हें कुछ भी लेना–देना नहीं है परन्तु वे स्वयं को और अपने कार्यों को ठीक समझते हैं। वे मुस्लिम धर्म का प्रचार करने में प्रयत्नशील हैं। सर्व–प्रथम तो उनका लक्ष्य क्या है ये बात मेरी समझ में नहीं आती। जब तक आप आत्मसाक्षात्कार नहीं प्राप्त कर लेते आपका मानव होने का कोई अर्थ नहीं। ऐसा मानव व्यर्थ है। आप अन्य लोगों से घृणा कर सकते हैं, उन्हें पीट सकते हैं, उनकी हत्या कर सकते हैं और ये सब पूरे विश्व में हो रहा है। आश्चर्य की बात है कि विश्व में सर्वत्र ये सब कुकृत्य मोहम्मद साहब के नाम पर हो रहे हैं। एक ओर तो आप ईसा मसीह को रखें, उनके बलिदान को रखें और दूसरी ओर मोहम्मद साहब और उनकी कुर्बानी को रखें। वे परस्पर नहीं लड़ सकते। उनकी एक ही सोच है, एक ही सूझ–बूझ है। वे कैसे परस्पर लड़ सकते हैं? परन्तु उनके अनुयायी सर्वत्र इतनी बुरी तरह से लड़ रहे हैं कि जब व्यक्ति उनके मूर्खतापूर्ण झगड़ों के विषय में सुनता है तो कभी–कभी तो उसे बहुत दुख होता है। ईसा मसीह जीवन पर्यन्त अविवाहित रहे। उन्होंने विवाह नहीं किया, विवाह करने की उन्हें कोई आवश्यकता भी न थी। उन्होंने विवाह नहीं किया और अत्यन्त युवावस्था में ही उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया। उनका क्रूसारोपित होना बताता है कि वे मृत्यु से नहीं डरते थे और जानते थे कि वह पुनर्जन्म पा लेंगे। ये कार्य उन्हें आज्ञा चक्र के माध्यम से करना पड़ा। आज्ञा चक्र बहुत ही तंग (Constrictive) है और उन्हें इस तंग मार्ग में से गुजरना था और इस पर स्थापित होना था। उन्होंने ये स्वीकार किया, पूरे हृदय के साथ स्वीकार किया कि यह एक कठिन परीक्षा है जो उन्होंने देनी है। **इसी प्रकार से आपका सहस्रार भी आज्ञा के मार्ग से ही खुल सकता है। परन्तु**

इससे पूर्व आज्ञा चक्र का खुलना आवश्यक है। आज्ञा चक्र खोलने के लिए फांसी चढ़ने की आवश्यकता नहीं है और न ही क्रूसारोपित होने की आवश्यकता है। आवश्यकता है अहं को क्रूसारोपित करने की। अहं (Ego) ऐसी चीज़ है कि इससे जल्दी से मुक्ति नहीं प्राप्त की जा सकती। आपमें अत्यन्त सूक्ष्म तरह का अहंकार हो सकता है। जैसे मैं फलां देश से हूँ, इस पर मुझे गर्व होना चाहिए। मैं इस प्रकार के परिवार से सम्बन्धित हूँ, इसका मुझे गर्व है। लोग सभी प्रकार की मूर्खताएं करते हैं जो पापमय हैं। परन्तु वे सोचते हैं कि वो बहुत महान हैं और उन्हें इस पर गर्व है। आपको इस अहं से लड़ना होगा अन्यथा आपका पुनर्जन्म असम्भव है। आपका चित्त आज्ञा चक्र में से तब तक न गुज़र सकेगा जब तक अहं की प्रवृत्ति बनी रहेगी। चित्त कार्य न करेगा। यह अत्यन्त सूक्ष्म घटना है अत्यन्त ही सूक्ष्म घटना कि आप आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् अपने अहं को देखते हैं। मैंने बताया कि आप स्वयं को पहचान जाते हैं।

पहली बात आप ये समझेंगे कि आपमें बहुत अधिक अहं एवं बन्धन हैं। जैसे भारत में मैं देखती हूँ कि कर्मकाण्डों के बन्धन लोगों में बहुत अधिक हैं। उनकी हर चीज़ कर्मकाण्डों से परिपूर्ण है और इन कर्म काण्डों से वे नहीं निकल सकते। इनमें तो ये बन्धन ही है परन्तु पाश्चात्य लोगों में अहं बहुत ही भयानक है। मेरी समझ में नहीं आता कि पश्चिमी लोग अपने आप को क्या समझते हैं। इस अहंकार में वो खो जाते हैं और ये भी नहीं देख पाते कि उनके अपने अन्दर, उनके समाज के, उनके अपने लोगों में, जो अहं के हाथों खेलते हैं, क्या कमी है? इस अहं का वास्तव में बहुत प्रभुत्व रहा है। इतिहास में बहुत से देशों तथा राष्ट्रों में किसी न किसी के अहं के कारण लोगों को सताया गया और उनकी हत्या की गई। एक बार जब वे इस बात को महसूस कर लेंगे कि वे कितने क्रूर थे, कितने आसुरी थे, कितने आक्रामक थे तो वे ये सब त्याग देंगे। परन्तु ये बात आपको महसूस करनी होगी और इसके लिए जैसा मैंने कहा आपको पुनर्जन्म प्राप्त करना होगा। **पुनर्जन्म प्राप्त किए बिना आप बिल्कुल न जान पाएंगे आपको इस बात की चेतना नहीं आ पाएगी कि आप कौन से कुकृत्य करते रहे हैं।** ये देखकर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार लोग गलत कार्य करते चले जाते हैं। उनका विज्ञापन करते हैं और नायकों के रूप में उभरकर आते हैं। मैं जब समाचार पत्र पढ़ती हूँ तो कहती हूँ कि क्या चहुँ ओर मूर्ख लोग ही हैं? पूर्णतः मूर्ख क्योंकि उन्हें अपने कार्य की समझ ही नहीं है। वे लोगों की हत्याएं किए चले जाते हैं और उसका आनन्द लिए जाते हैं। वे इतने हिंसक हैं! ये समझ पाना असंभव है कि मृत्यु के पश्चात् या मृत्यु से पूर्व भी उन्हें कैसा जीवन प्राप्त होगा? इस सारे परिदृश्य में आप विश्व की तस्वीर देख सकते हैं। आप

देख सकेंगे कि ऐसे सभी देश जो बेकार की चीज़ों के लिए लड़ रहे हैं, वे बहुत गरीब हैं, बहुत बुरी अवस्था में है और विनाश के कगार पर हैं। परन्तु अपने कष्टों का कारण वे नहीं जानना चाहते। क्यों? क्या हो रहा है? समस्या क्या है? जहाँ बहुत वैभव है वे भी खो जाते हैं, उन्हें भी पुनरुत्थान की आवश्यकता है। उन्हें भौतिकवाद से ऊपर उठकर देखना पड़ेगा कि वो जो कुछ कर रहे हैं वह गलत है। कपटी लोगों की तरह से वो छल कर रहे हैं। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि पूरा अर्थशास्त्र धोखाधड़ी पर आधारित है, कि किस प्रकार आप लोगों को धोखा दे सकते है। कपट करते हुए आपको ये सभी महसूस नहीं होता कि आप ऐसा कर्म कर रहे हैं, जिससे लोगों में असुरक्षा की भावना आ जाए। ये पैसे का धन्धा ही ऐसा है कि व्यक्ति को लालची बना देता है और वह धन को बहुत अधिक महत्व देने लगता है।

ईसा–मसीह के जीवन से यह बात समझी जानी चाहिए वे अत्यन्त साधारण एवं गरीब व्यक्ति थे, एक बढ़ई के पुत्र। उनके लिए पैसा अधिक महत्वपूर्ण न था, बेकार था। उनके लिए आत्मा ही सभी कुछ था। वे लोगों को एक ही बात बता रहे थे कि आप आध्यात्मिक जागृति प्राप्त कर लो, ये बहुत महत्वपूर्ण है। ये बात समझने का प्रयत्न करो कि इन सब चीज़ों से परे भी एक जीवन है, इसलिए इस जीवन से, जिसे आप बर्बाद कर रहे हो, कुछ उपलब्धि प्राप्त कर लो। वे अत्यन्त विवेकशील थे और जिस प्रकार उन्होंने गिरिजाघरों में बड़े–बड़े पादरियों से धर्म की बात–चीत की वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है कि किस प्रकार एक नन्हा बालक धर्म को इतनी गहनता पूर्वक समझता है। निःसन्देह उस समय वे छोटे से लड़के थे परन्तु वे परमात्मा के बन्दे थे, परमात्मा द्वारा सृजित। वे श्री गणेश थे, वे ॐ हैं, वे ज्ञान हैं, सभी कुछ हैं। इसके बावजूद भी कोई उन्हें पहचान न सका क्योंकि लोग सत्य को नहीं पहचान सकते। लोग इतने मूर्ख हैं कि वे किसी भी असत्य एवं गलत चीज़ को अपना सकते हैं। अन्ततः उन्होंने ईसामसीह को क्रूसारोपित कर दिया। यह अजीबो–गरीब संसार है जिसमें सन्तों को सूली पर चढ़ा दिया जाता है और राक्षसों को इतना महत्व दिया जाता है! परन्तु अब समय आ गया है कि सभी गलत कार्य करने वाले, लोगों का गला दबाने वाले, इन सब आसुरी लोगों का गला दब जाएगा। उनका पर्दाफाश हो जाएगा।

मैंने आपको बताया है कि ये वर्ष अनावरण का वर्ष है। यदि अब भी ये लोग आक्रामक और लालची हैं तो इनका पर्दाफाश हो जाएगा। इनका लालच पूरी तरह से अनावृत हो जाएगा और उन्हें नरक में डाल दिया जाएगा। इस वर्ष के लिए मैंने भी विशेष रूप से यही सोचा है। ये घटित होना है। अतः सर्वोत्तम बात ये है कि अपना पुनरुत्थान प्राप्त कर लें, उच्च जीवन अपनाएं और

स्वयं देखें कि आप क्या कर रहे हैं। घटित हो पाने वाली महानतम चीज़ें कौन सी हैं? पैसा? सत्ता? इनसे किसी को लाभ नहीं होता, इनसे किसी को यश नहीं मिलता। शराबी को कोई याद रखता है? कोई उनके पुतले नहीं बनाता। तो कौन श्रेष्ठ होता है और किसे ईसा–मसीह की तरह से महान यश प्राप्त होता है? केवल उन्हें जो मानव की सहायता करते हुए उनके हित के लिए बलिदान हो जाते हैं। वो लोग ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि वे मानव को प्रेम करते हैं।

आप जब किसी से प्रेम करते हैं तो सोचने लगते हैं कि उनके लिए क्या अच्छा है और उनके हित के लिए आप क्या कार्य कर सकते हैं। कुछ माता–पिता भी अज्ञानी हैं, वो नहीं जानते कि उन्हें अपने बच्चों के लिए क्या करना है। भिन्न प्रकार की चीज़ों से, खान–पान आदि से अपने बच्चों की आँखें चका–चौंध करने लगते हैं। परन्तु जिन बच्चों का पालन आपने प्रेम के साथ नहीं किया वो किसी भी बात के लिए उत्तरदायी न होंगे, भटक जाएंगे। यदि वे जानते हों कि उन्हें कोई प्यार करने वाला है तो उस प्रेम की खातिर न तो वो भटकेंगे और न ही गलत कार्य करेंगे।

तो ईसा–मसीह या अन्य अवतरणों का महानतम गुण ये था कि वो प्रेम करते थे। वे मानवमात्र से प्रेम करते थे। हमें भी यही करना है। क्या हम केवल स्वयं को, अपने परिवारों को, अपने देश को प्रेम करते हैं या पूरे विश्व को प्रेम करते हैं, पूरे विश्व के लिए जीते हैं? क्या हम कुछ गिने–चुने लोगों के लिए तो नहीं जीते। हमें देखना चाहिए कि हमारी आकांक्षाएं क्या हैं, हमारी इच्छाएं क्या हैं, हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं? प्रेम पूर्वक यदि आप अन्य लोगों के विषय में भी अपनी ही तरह से सोचते हैं तो यह अत्यन्त आनन्ददायी है। चाहे आपके पास जितने आभूषण हों, चाहे जितने घर हों, संपत्ति हो, धन हो, सत्ता हो, चाहे आप इस देश के या किसी अन्य देश के प्रधानमंत्री हों, परन्तु यदि आपके मन में अन्य लोगों के लिए प्रेम नहीं है तो आप जीवन का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते। आनन्द तो आपको प्रेम के माध्यम से ही प्राप्त होता है और प्रेम करने की आपकी शक्ति के माध्यम से। आनन्द लेने का और कोई मार्ग नहीं है। आपके पास चाहे टेलिविज़न हो, संगीत हो, चाहे आप भोजन और पार्टियों आदि पर जाएं, परन्तु कोई भी चीज़ आपको सच्चा आनन्द नहीं देगी। ईसा–मसीह ने हमें यही शिक्षा दी कि उनके हृदय में मानव मात्र के लिए प्रेम था और ये सभी लोगों को पुनरुत्थान के लिए तैयार करना चाहते थे। वे सहजयोग के आने से पूर्व अवतरित हुए। उन्होंने यदि ये कार्य न किया होता तो मेरे लिए यह उपलब्धि प्राप्त करना कठिन होता। इस प्रकार उन्होंने सहजयोग के लिए स्थितियां बनाई जिसके कारण आपके आज्ञा चक्र खुले और आज्ञा चक्र को पार करके कुण्डलिनी को ऊपर

ले जाकर आप अपने सहस्रार को, अपने तालू अस्थि क्षेत्र को खोल सकते हैं। उन्होंने सोचा कि लोगों के प्रति प्रेम का यही अंग–प्रत्यंग है, इसलिए उन्होंने यह कार्य किया और बहुत से लोगों का हित किया।

सहजयोग में ईसा–मसीह हमारे अत्यन्त सहायक हैं। उनके बिना, मैं नहीं जानती, किस प्रकार मैं आज्ञा चक्र को खोल पाती क्योंकि आप जानते हैं कि आज्ञा बहुत कठिन चक्र है। आज्ञा चक्र के माध्यम से लोग गलत कार्य किए चले जाते हैं और उन्हें ऐसा करते हुए बुरा भी नहीं लगता। वो ये भी नहीं सोचते कि उन्होंने कुछ गलत किया है, किसी को हानि पहुँचाई है, किसी को कष्ट दिया है या किसी को रोने के लिए विवश किया है! अपनी आज्ञा में ही वे चलते चले जाते हैं। परन्तु अपने कारनामे देखने के लिए उनके पास हृदय ही नहीं है। ईसा–मसीह हमें इस बात का ज्ञान करवाते हैं कि हम अपना आज्ञा चक्र खोलें, इससे ऊपर उठें। यहाँ हम इसे तीसरी आँख कहते हैं। उस दिन एक महिला तीसरी आँख की एक पत्रिका लेकर आई। जब मैंने उसे इसके विषय में समझाया तो वह हैरान हो गई। **तीसरी आँख के खुलने का अर्थ यह है कि आपके आज्ञा चक्र पर ईसा–मसीह जागृत हो गए हैं।** यही तीसरी आँख है। ईसा मसीह आपके अन्दर साक्षी भाव का सृजन करते हैं और आप पूरे नाटक के दृष्टा मात्र बन जाते हैं। पूरे नाटक को आप देखने लगते हैं और आश्यर्चचकित होते हैं कि आप कितने शान्त हैं, किस प्रकार निर्विचार चेतना में हैं और बिना प्रतिक्रिया किए किस प्रकार हर चीज़ को देखते हैं। ये वह स्थान है जहाँ हमें ये बात माननी पड़ती है कि ईसा मसीह हमारे आज्ञा चक्र पर प्रकट हुए। वहीं उनका पुनर्जन्म हुआ। ये सब हमारे अन्दर घटित हो चुका है। मशीन के भिन्न पुर्जों की तरह से हमारे अन्दर सूक्ष्म तन्त्र को बनाया गया है और हमारे अन्दर भिन्न चक्र तथा ऊर्जा केन्द्र हैं। यह अन्तिम चक्र कठिनतम है। उसे वास्तव में ईसा–मसीह ने खोला।

ईसा मसीह ने ही ये कार्य करने का साहस किया और इसे इतने सुन्दर ढंग से किया कि अब हमारे अन्दर अहं को देख पाने की योग्यता है। स्वयं ये देख पाने की योग्यता है कि हम क्या कर रहे हैं और स्वयं को कुछ विशेष क्यों समझते हैं? एक बार जब आप अपने अहं को देखने लगते हैं तो आप हैरान होते हैं कि जो भी कार्य आप करते हैं, जितना भी कुछ आप करते रहें आप कभी थकेंगे नहीं। थकते तो आप इसलिए है कि आपका अहं सदैव यही कहता रहता है, ओह,! आप इतने महान हैं! अन्य लोगों के लिए आप इतना सारा कार्य कर रहे हैं। आपने इतना कुछ प्राप्त कर लिया है, आदि आदि! तो इसी प्रकार **अहम् हर समय हमारी झूठी महानता के विषय में हमें बढ़ावा देता रहता है और हम स्वयं को महान मान बैठते हैं** और सोचते हैं क्यों हम कार्य करें और क्यों

हम अन्य लोगों की सहायता करें। ये सब अटपटे विचार हमारे मस्तिष्क में भरने लगते हैं और इनके कारण हम परेशान हो जाते हैं, इनसे लड़ते हुए हम थक जाते हैं। हमारी इस सारी स्थिति को ईसा–मसीह ने सुगम बना दिया है। परन्तु ईसाई राष्ट्रों को देखें, ये लगभग एक ही जैसे हैं। ईसा–मसीह की शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत। ये अत्यन्त आक्रामक देश हैं। लोग इतने आक्रामक हैं कि पूरा विश्व इन्हें अत्यन्त महान समझता है मानों वे पूरे संसार के सम्राट हों। मुझे इस बात का ज्ञान है क्योंकि भारत में हम इनकी दासता में थे। मुझे हैरानी थी कि ये लोग बाहर से आए हैं और किस प्रकार यहाँ स्वामी बन बैठे हैं! वहाँ वे स्वामी थे और हमसे इतना बुरी तरह से व्यवहार करते थे और वास्तव में उन्होंने हमें दास बना लिया था। इस प्रकार दास प्रथा शुरू हुई और भारत में तथा विदेशों में ये कुप्रथाएं आरम्भ हुई। सर्वत्र लोग सोचने लगे कि वे ईसाई हैं और अत्यन्त महान हैं। वे चर्च जाया करते थे। परन्तु चर्च जाकर उन्होंने क्या सीखा? किस प्रकार लोगों पर प्रभुत्व जमाना है, किस प्रकार लोगों को अपने निर्णय मानने के लिए मजबूर करना है, किस प्रकार अपने से गरीब और लोगों से उनका सब कुछ छीन लेना है? ये सारी चीज़ें हमने स्वयं देखी हैं। अहंकारी लोगों के साथ जो बहुत शक्तिशाली होते हैं ये सब घटित होता है और वो अन्य देशों का सभी कुछ लूट लेते हैं। उन्हें किसी के देश छीन लेने का क्या अधिकार है, मेरी समझ में नहीं आता? आधुनिक युग में ये सारी जटिलताएं हैं। इनकी स्थिति बहुत ही भयानक है। इतनी बुरी स्थिति पहले कभी न हुई थी। कभी कहीं कोई एक हिटलर जैसा व्यक्ति हुआ करता था परन्तु सारा विश्व उसके विरुद्ध होता था। लोग भ्रमित न थे। कोई ये न जानता था कि हमें सदैव लड़ते रहना होगा। अब हो सकता है कि समाचार पत्रों के कारण, या मैं नहीं जानती क्यों, कोई नहीं जानता कि क्या ठीक है क्या गलत? हर चीज़ के विषय में विवाद होने के कारण लोग समस्या की वास्तविकता को जानने का प्रयत्न नहीं करते और वे आँखें बन्द करके हत्याएं किए चले जा रहे हैं। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि इस विश्व में मानव पशुओं से भी बढ़कर एक दूसरे की हत्या करता है। हम अधमतम हो गए हैं, पशुओं से भी अधम कि हम अपनी ही हत्या किए जा रहे हैं, अपनी मानवजाति की, अपने ही लोगों की! भारत में भी इन हत्याओं को देखकर आश्चर्य होता है। कश्मीरी लोग कश्मीरियों की हत्या कर रहे हैं। कहीं भी आप जाएं लोग परस्पर लड़े जा रहे हैं। आप यदि अफ्रीका जाएं तो आप हैरान होंगे कि किस प्रकार वो लोग आपस में लड़ रहे हैं! मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि आजकल युद्ध का सिद्धान्त बहुत ताकत पकड़ गया है। लोग सोचते हैं कि युद्ध मानव का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। आप कुछ भी कहें एकदम झगड़ा शुरू हो जाता है।

अब आप ईसा मसीह और उनके जीवन को देखें। वो कभी किसी से नहीं लड़े, किसी से वाद–विवाद नहीं किया और उन्होंने क्रूसारोपित होकर मृत्यु स्वीकार की – मृत्यु को स्वीकार किया। उन्होंने मृत्यु को इसलिए स्वीकार किया क्योंकि वे जानते थे कि यह पुनरुत्थान के लिए है। केवल उन्हीं के पुनरुत्थान के लिए नहीं, पूरे विश्व के पुनरुत्थान के लिए। हमें यही बात सीखनी है। हमें पुनरुत्थान के आदर्श (Model) बनना है। इन सभी चीज़ों को घटित होते हुए हम देखते हैं और इनके कारण हमें चिन्ता होती है। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् लोग देखते हैं कि उनका वातावरण इन सब चीज़ों से परिपूर्ण। बिना बात के लोग परस्पर लड़ते हैं। तब उन्हें समझ आता है कि हमारे अपने ही लोग ये सारी मूर्खताएं कर रहे हैं। आप इन्हें सुधार नहीं सकते, इसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते। परन्तु यदि आपका आज्ञा चक्र स्वच्छ है, आपका अहं शान्त हो गया है, आपके मस्तिष्क में दूसरों पर शासन करने की इच्छा नहीं है तथा यदि आपके अन्दर के बन्धन (Conditionings) समाप्त हो गए हैं तो आप शन्ति सृजन करने के माध्यम बन जाते हैं। तब आप जहाँ भी हों शान्ति का सृजन कर सकते हैं। सहजयोगियों के लिए समझने की यह विशेष बात है कि जब आपमें आज्ञा (अहं) का अभाव होता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो आप दुखी हों। परन्तु इसके कारण आप दुखी नहीं होते क्योंकि यह कार्य आप अन्य लोगों के लिए, अपने आस–पास के लिए, अपने मित्रों के लिए, पड़ोसियों के लिए या आप कह सकते हैं अपने देश के लिए, सबके लिए कर रहे होते हैं। आपमें जब आज्ञा (अहं) नहीं होती तब आप दिव्य शक्ति का इतना महान माध्यम बनते हैं कि यह कुछ भी कार्यान्वित कर सकती है। यह लोगों के हृदयपरिवर्तन कर सकती है। ऐसा हो सकता है। पहले भी लोगों में व्यक्तिगत रूप से ये परिवर्तन हुए परन्तु अब यह परिवर्तन सामूहिक रूप में हो सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये सारा क्रोध, आक्रामक प्रवृत्ति और इन घिनौने लोगों की सभी चुनौतियां वो लोग समाप्त कर सकते हैं जिनमें अहं नहीं है, जो अपनी गलत चीज़ों को उचित नहीं ठहराते और जिन्हें सत्य के विषय में स्पष्ट ज्ञान है। ऐसे लोग कुछ बोलें या न बोलें, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु ये लोग विश्व शान्ति को नष्ट करने में लगी हुई उन सभी आक्रामक शक्तियों को विफल करने के लिए सुरक्षा कवच हैं।

अतः ईसा मसीह ने ये बलिदान शान्ति के लिए किया, पृथ्वी पर शान्ति स्थापित करने के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। **शान्ति होनी चाहिए परन्तु यदि मनुष्य के अन्तस में ही शान्ति नहीं है तो बाहर किस प्रकार शान्ति स्थापित की जा सकती है?** कितनी आश्चर्यजनक बात है कि शान्ति की बातें करने वाले बहुत से देश युद्धों और खून खराबे में लगे हुए हैं! ऐसा किस प्रकार कर सकते हैं? उनकी

समझ में नहीं आता कि ये कोई समाधान नहीं है। एक ही समाधान जो मेरी समझ में आता है कि इन लोगों को सहज में ले आया जाए, केवल यही समाधान है। आपको उनका अहं दूर करना होगा। आप देखते हैं कि किस प्रकार लोगों का अहं कार्य करता है और अहं के प्रभाव में कार्य करना कितना भयानक हो सकता है! यही वह समस्या थी जिसे ईसा मसीह ने सुलझाया। उन्होंने मानव के अहं को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया। आपको विनम्र बनाने के लिए, कोमल व्यक्ति बनाने के लिए उन्होंने अहं को दूर करने का प्रयत्न किया। **ये कहना गलत है कि विनम्र एवं कोमल व्यक्ति सदा खतरे में होता है।** लोग जब आक्रामक होते हैं और दूसरों पर प्रभुत्व जमाने के प्रयत्न में लगे होते हैं तो विजय विनम्र व्यक्ति की ही होती है, अहंकारी व्यक्ति की नहीं।

तो मुख्य चीज़ अब ये देखना है कि आपके ये श्रीमान अहं किस प्रकार कार्य करते हैं। ये देखना अत्यन्त रोचक है, अत्यन्त रोचक, कि किस प्रकार ये नाटक करते हैं, किस प्रकार छाने का प्रयत्न करते हैं और किस प्रकार ये दर्शाने का प्रयत्न करते हैं कि किस प्रकार ये अन्य लोगों से श्रेष्ठ हैं। ये देखा जाना चाहिए, अत्यन्त स्पष्ट रूप से ये देखा जाना चाहिए कि इस आज्ञा (अहं) की मंशा क्या है? यह अत्यन्त शरारती तत्व है, अत्यन्त हानिकारक, और अत्यन्त परेशान करने वाला भी। तो ये अहंकारी लोग ऐसे ही होते हैं और अन्ततः ये अधीर हो उठते हैं, अत्यन्त अधीर और इन्हें अपना कोई अन्त नजर नहीं आता। पहले तो ये अन्य लोगों को नियंत्रित करते हैं परन्तु बाद में इनको नियंत्रित करने की आवश्यकता पड़ती है। ये ऐसे ही होते है क्योंकि हर समय ये अन्य लोगों को नियंत्रित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उनकी समझ में नहीं आता कि स्वयं को किस प्रकार नियंत्रित करें। (क्या बात है बच्चा इतना अधिक क्यों रो रहा है? इतना क्यों रो रहा है? अवश्य कोई समस्या होगी। प्रायः मेरे प्रवचन में बच्चे शान्त रहते हैं।) अब ये अहं भी इसी बच्चे की तरह से है ये न कुछ सुनता है और न ही कुछ समझता है। हर चीज़ को अस्त–व्यस्त किए चले जाता है। हमारा अहं भी इसी प्रकार का व्यवहार करता है। इसे न तो सामूहिकता का ज्ञान है न यह इस बात को समझता है कि इसकी मंशा क्या है, ये कर क्या रहा है और किसे हानि पहुँचा रहा है। यह कुछ नहीं जानता, ये कुछ नहीं जानता। अपने व्यक्तित्व की श्रेष्ठता का लोहा मनवाने के लिए अपने संतोष, अंधसन्तुष्टि के लिए आप लोगों को हानि पहुँचाते चले जाते हैं।

अपने अहं को यदि आप देखेंगे तो इस विदूषक पर आप हंसेगे और उसका आनन्द लेंगे। आप देखेंगे कि ये क्या चीज़ है, ये सदा मुझे बेवकूफ बनाता रहा! ये अहं कितना भयानक था! ईसा मसीह के जीवन काल में लोगों में भयंकर अहंकार था। किसी ने

इसके बारे में बात नहीं की, किसी ने कुछ नहीं कहा। अतः उनका ये दर्शाना ही सर्वोत्तम बात थी कि आप अपना जीवन बलिदान करके आज्ञा चक्र का भेदन कर सकते हैं। परन्तु सहजयोग में ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु सहजयोग में भी एक प्रकार से आपको ऐसा करना होता है। आपमें यदि अहं है तो सर्वप्रथम आपको साक्षी अवस्था प्राप्त करनी पड़ती है। अहं के होते हुए आप साक्षी अवस्था प्राप्त नहीं कर सकते। बिना साक्षी अवस्था प्राप्त किए आप अपने अहं को नहीं सुधार सकते। ये अत्यन्त भ्रामक स्थिति है। मान लो आपमें अहंकार बहुत बढ़ गया है तो आप सदैव इसे तर्क संगत ठहराने में लगे रहते हैं। आप सोचते हैं कि जो कुछ भी मैंने किया है ये सबके लिए हितकर है, मेरे लिए भी अच्छा है। आत्म–श्लाघा आरम्भ हो जाती है। इस स्थिति में आप कभी भी ये नहीं देख पाते कि आप अपने साथ और अन्य लोगों के साथ क्या कर रहे हैं? ये अत्यन्त अंधी मूर्खता है। अहं जब इस प्रकार से बढ़ता है तो हिटलर उत्पन्न हो सकते हैं। सभी प्रकार की घटनाएं हो सकती हैं। ये लोग किसी भी छोटी सी बात को लेकर समूह बना लेते हैं और तरह–तरह की चीज़ें करने लगते हैं। वे कहेंगे कि हमारा ये समूह आध्यात्मिक है और हम आध्यात्मिक लोग हैं और जो भी कुछ हम करते हैं वह ठीक है। परन्तु कौन कहता है उनके कार्य ठीक होते हैं? कौन से कानून से उनके कार्य ठीक होते हैं? इसी प्रकार बहुत से पंथ खड़े हो गये और जहाँ भी ऐसे लोगों की संख्या बढ़ जाती है वहाँ पर धर्म के नाम पर सभी प्रकार की समस्याएं व हत्याएं शुरू हो जाती हैं। ये आध्यात्मिकता किस प्रकार हो सकती है?

आध्यात्मिकता में सर्वप्रथम व्यक्ति विनम्र हो जाता है – अत्यन्त, अत्यन्त विनम्र। विनम्रता उसकी शक्ति बन जाती है, विनम्रता ही कार्य करती है और उसे गौरव प्रदान करती है। ऐसे लोग आक्रामक नहीं होते। आप देखिए कि हिटलर आया और समाप्त हो गया। कौन उसकी पूजा करता है? मुसोलिनी जैसे अन्य लोग भी आए और मृत्यु को प्राप्त हुए। कौन उनकी पूजा करता है? ऐसे बहुत से लोग आए और चले गए परन्तु इन दुष्ट लोगों का पुतला तक कोई स्थापित नहीं करना चाहता।

अतः अहंकारी लोग वास्तव में बहुत मूर्ख होते है क्योंकि उनकी सोच ही गलत होती है। अन्ततः ये बात मान ली जाती है कि ये लोग अत्यन्त दुष्ट थे। कोई उनका नाम तक नहीं लेना चाहता। समय इस बात को साबित कर देता है कि वो क्या थे और उन्हें क्या होना चाहिए था। यह परमात्मा का बहुत ही सोचा विचारा कार्य है। आपको अपने अहं के हाथों नहीं खेलना चाहिए। स्वयं को देखने को प्रयत्न करें। ओह, श्रीमान अहंकार, तो आप यहाँ हैं? **अहंकार को देखने का प्रयत्न करें और उस समय यदि आप ईसा मसीह का नाम लेंगे तो**

अहंकार चला जाएगा। ईसा–मसीह का मंत्र लेने मात्र से अहंकार दूर हो जाएगा।

इस दुष्ट अहंकार (Ego) का दूसरा पक्ष बन्धन (Conditioning) है। इसका भी अत्यन्त, अत्यन्त, अत्यन्त सूक्ष्म सम्बन्ध है। उदाहरण के रूप में मान लो कोई व्यक्ति आपके घर आकर कहने लगे कि, आह! कितना गन्दा कालीन है! मुझे ये रंग बिल्कुल पसन्द नहीं है, मुझे ये बिल्कुल पसन्द नहीं है। उस व्यक्ति को ये बात भी समझ में नहीं आती कि इस प्रकार की बातें करके वह दूसरे व्यक्ति को दुख पहुँचा रहा है। ऐसा व्यक्ति कितना मूर्ख होता है क्योंकि इस प्रकार की बातें करने वाले को कोई पसन्द नहीं करता! परन्तु उसके लिए यह बात आवश्यक है कि वह अन्य लोगों को सुधारे। उसका बन्धन (Conditioning) है कि एक विशेष प्रकार के कालीन अच्छे होते हैं उसके अतिरिक्त कोई नहीं। ये बन्धन कार्य करते हैं और वह अनाप–शनाप बोलता चला जाता है कि ये अच्छा नहीं है, वह अच्छा नहीं है। ऐसे व्यक्ति किसी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते, किसी भी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते। किसी भी घर में ऐसा व्यक्ति जब जाता है तो वह किसी भी चीज़ का आनन्द नहीं ले पाता क्योंकि उसके बन्धन के अनुसार किसी अन्य प्रकार की चीज़ ही अच्छी होती है। अपने बन्धन के अनुसार ही वह सभी निर्णय लेते हैं। उनकी सोच बन्धन मुक्त नहीं होती। उस वस्तु के आन्तरिक महत्व और आन्तरिक मूल्य से उन्हें कुछ नहीं लेना देना। वो तो बस ये कहते चले जाएंगे मुझे ये पसन्द नहीं है, यह अच्छी नहीं है। सहजयोगियों को कभी ऐसा नहीं कहना चाहिए। चाहे जो हो, मैं कभी ऐसा नहीं कहती। जो भी कुछ हो मैं कहती हूँ 'ठीक है', उस वस्तु की मैं आलोचना नहीं करती। आलोचना व्यक्ति के बन्धनों (Conditioning) की देन है क्योंकि आपके अन्दर वो बन्धन बने हुए हैं। आप यदि अंग्रेज हैं तो आपमें अंग्रेजों के बन्धन होंगे? इन चीज़ों में सुधार भी आते हैं। उनकी गायों में एक विशेष रोग हो गया है। जब आप इतने निपुण लोग हैं तो आपकी गायों में ये रोग कैसे हो गया? यूरोप में पशुओं को एक अन्य रोग हो गया। जब आप ये सोचते हैं कि पृथ्वी पर आपसे अधिक स्वच्छ कोई नहीं है तो क्यों ये रोग वहाँ के पशुओं में पनप उठा? इसका कारण खोजने का प्रयत्न करें। ये उनका अपना बन्धन है कि हम सभी कुछ जानते हैं, पूरे विश्व में हम सर्वोत्तम हैं और दूसरों पर शासन करने का हमें अधिकार है। अमरीका जैसे अत्यन्त वैभवशाली लोग अपनी कोई सीमा न देखते थे। उनके साथ क्या हुआ? अचानक ये ऐसा देश बन गया है जिसका हर व्यक्ति दयनीय है। इसका क्या कारण है? ऐसा क्यों हुआ?

अपना दूसरा पक्ष दिखाकर प्रकृति आपको सुधारती है। किसी भी बात की आप यदि शेखी हाँकेंगे या अपने बन्धन किसी और

पर थोपने की कोशिश करेंगे तो प्रकृति इसका विरोध करेगी, विरोध में खड़ी हो जाएगी। ये इतने अच्छे ढंग से कार्य करती है जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते! तब भूचाल आते हैं और सभी प्रकार की प्राकृतिक विपत्तियाँ टूट पड़ती हैं। मिस्सी–सिप्पी नदी के निकट श्वेत लोगों का एक समूह रहता था, उन्हें लाल गर्दन (Red Necks) कहा जाता था क्योंकि वो सदैव क्रोध में भरे रहते थे और उनकी गर्दनें तपी रहती थीं। ये लोग इतने क्रोधी एवं उग्र स्वभाव के थे। अपने अत्याचारों के लिए ये प्रसिद्ध थे। किसी की भी ये हत्या कर देते थे और उसका दोष किसी अन्य पर मढ़ देते, विशेष रूप से वहाँ के मूल निवासियों पर और उन्हें गिरफ्तार करके उनकी हत्या कर देते। ये सब चलता रहा, चलता रहा। एक दिन मिस्सी सिप्पी नदी में इतनी बाढ़ आई कि पानी उनके घरों में प्रवेश कर गया और इन लाल गर्दन वाले लोगों को अपने सामान के साथ भागते हुए मैंने देखा। जो सामान वो न उठा सके उसको उन्होंने पीछे छोड़ दिया। भागते हुए भी उनका सामान गिर रहा था। इन लोगों में इस प्रकार से भगदड़ मच गई थी! अब मुझे बताया गया है कि वहाँ की स्थिति पहले से काफी ठीक है। अश्वेत लोगों की हत्याओं तथा उन्हें सताने के कष्टों का फल उन्हें भुगतना पड़ा। मिस्सी–सिप्पी नदी ने उन्हें एक सबक सिखा दिया।

बन्धन ग्रस्त लोग प्रकृति को भी पसन्द नहीं हैं। प्रजातिवाद की तरह से बन्धन (Conditioning) सभी देशों में आज भी बहुत बड़ी समस्या खड़ी कर रहे हैं। प्रजातिवाद भी बहुत बड़ा बन्धन है। मेरा कहने से अभिप्राय ये है कि कोई व्यक्ति श्वेत हो या अश्वेत हो या रक्तवर्ण, क्या फर्क पड़ता है? उसे परमात्मा ने बनाया है। मैं सदैव कहती हूँ कि अमरीका से यदि सभी अश्वेत लोगों को निकाल दिया गया तो वहाँ क्या शेष रह जाएगा? वहाँ के लोग न तो गाना जानते हैं, न खेलना जानते हैं, न ही शल्य–चिकित्सा कर पाते हैं। यदि सारी भारतीय नर्सें व डॉक्टर वहाँ से लौट आएं तो वो क्या करेंगे? अपना कोई अन्त न समझने वाले ये लोग अत्यन्त प्रजातिवादी हैं। आज भी वो ऐसे ही हैं। परन्तु शनैः–शनैः निश्चित रूप से वे सुधरेंगे क्योंकि अपनी कमी को वो जान जाएंगे। पूरा विश्व एक है और एक दूसरे की सहायता करने के लिए आपको सभी की आवश्यकता है। स्वयं को महान समझने का बन्धन अत्यन्त भयानक है। यह अहं और बन्धनों का सम्मिश्रण हैं। बन्धन अहं पैदा करते हैं कि हम सर्वश्रेष्ठ हैं।

मुझे ये जानकर अत्यन्त हर्ष होता है कि आत्म–साक्षात्कार के बाद व्यक्ति का पुनरुत्थान हो जाता है, लोग भजन गाने लगते हैं। ये सोचने और समझने लगते हैं कि हमारी जाति में क्या कमी है, हम अब तक क्या गलत कर रहे हैं। वे इतने सावधान हो उठते हैं कि आत्म–साक्षात्कार

प्राप्त करने के पश्चात् वो कहते हैं कि हम ही लोग आज तक इस प्रकार की मूर्खता करते रहे! कल्पना करें! अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है कि किस प्रकार आप अपने ही देश की बुराइयों के प्रति चेतन हो उठते है!

अतः आज्ञा चक्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है और मैं सोचती हूँ कि ईसा मसीह ने भी महसूस किया कि जब तक आज्ञा चक्र का भेदन नहीं हो जाएगा लोग उत्थान की ओर नहीं बढ़ पाऐंगे। यही कारण था कि उन्होंने अपने आप को क्रूसारोपित करवा लिया और फिर पुनर्जन्म ले लिया क्योंकि आज्ञा का वध किए बिना व्यक्ति पुनरुत्थान नहीं प्राप्त कर सकता। अब ये सभी चीज़ें इतनी अच्छी तरह से कार्यान्वित हो रही हैं कि पूरा विश्व मूर्खता के इस पूर्ण विनाश का विशाल दृश्य देख रहा है। वे इसे अत्यन्त स्पष्ट रूप से देख रहे हैं और अब वो सभी लोग शान्त हो गए हैं जो कभी हमारी तरफ देखते भी न थे, जिनके नाक, होंठ और गर्दनें तनी हुई होती थीं। वो भी हैरान हैं कि ऐसा किस प्रकार घटित हो गया है और किस प्रकार हम पर ये अभिशाप आ गया! यूरोप के लोगों को विशेष रूप से अन्य मनुष्यों के सौन्दर्य, प्रेम एवं महानता को समझना होगा। इससे उन्हें बहुत संतोष मिलेगा। आज मन्दी की इतनी बड़ी समस्या क्यों है? सर्वत्र मन्दा आ गया है। ये मन्दा श्री मान अहंकार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, ये वही बन्धन हैं जो सर्प की तरह से खा रहे थे। अब ये कम हो गए हैं। ये पूर्ण हैं, अधिक की अब इन्हें आवश्यकता नहीं है ये पूरे भर चुके हैं और हो सकता है इन्हें स्वाभाविक रूप से अपचन हो जाए। अतः ये दोनों बाधाएं (सर्प) जो मानव को खा रही थीं अब उतार पर हैं। नाटक देखने का ये सर्वोत्तम समय है। अहं का और अपने बन्धनों का नाटक देखने का। किस प्रकार इन दोनों बाधाओं ने मानव को खोखला कर डाला? व्यक्ति को इसके लिए शर्म आनी चाहिए और इसके विषय में उसे लज्जित होना चाहिए। जब आप अहंकार से भरे हुए होते हैं तो आप कुछ नहीं देख सकते। दूसरों पर बन्धन थोपना भी भयानक बात है। मैं तो समझ भी नहीं सकती कि लोग अन्य लोगों पर बन्धन थोपते हैं! आज आप सभी लोग भारतीय संगीत का आनन्द लेते हैं। परन्तु जब भारत में अंग्रेजों का शासन था तो वो लोग सोचा करते थे कि ये भयानक शोर–शराबा है। इसे वे कभी न समझ सकते। आज वे संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए बड़ी–बड़ी रकमों को खर्च करते है, ये भी एक प्रकार की पराजय है। वो संगीत को अब भी बिल्कुल नहीं समझते परन्तु भारतीय संगीत को सुनने के लिए वो जाएंगे अवश्य क्योंकि ऐसा करना बहुत बड़ा फैशन माना जाता है।

तो आपका अहं भी इतना मूर्ख है कि परमात्मा जाने कब ये आपको मुक्त करेगा। आज ये कहता है कि ये सर्वोत्तम है परन्तु कल कहेगा नहीं नहीं आपको दूसरी तरह

का संगीत अपनाना चाहिए, वह कहीं बेहतर है। ये लोग निर्णय नहीं कर पाते। उनमें सद्–सद्‌विवेक बुद्धि का अभाव है। अहंकारी लोग विवेकहीन हैं, अच्छे बुरे में वे भेद नही कर सकते। परन्तु परमात्मा का बहुत–बहुत धन्यवाद है कि अब ऐसे लोगों को काफी दण्ड मिल चुका है। परन्तु ईसा–मसीह के जीवन का नमूना प्रमाणित करता है कि आपका पुनरुत्थान अत्यन्त आवश्यक है। पुनरुत्थान इतना अन्तर्जात है कि इसे प्राप्त किए बिना आप खो जाते हैं। वह चाहे कोई देश हो, व्यक्ति हो या संस्था हो, आपका ये अहं अन्ततः आपको नष्ट कर सकता है जैसे इन पादरियों और मुल्लों आदि के अहंकार ने किया। इन लोगों में आपको भ्रमित करने की भयावह शक्ति है क्योंकि आपके अहं में विवेक का अभाव है। वह ऐसा सोचते तक नहीं। ऐसे लोग जब अहंग्रस्त न होकर बन्धन ग्रस्त होते हैं तो स्थिति और भी खराब होती है क्योंकि बन्धनों में फँसे होने की स्थिति में आप सभी प्रकार की मूर्खताओं में विश्वास करने लगते हैं और अपने स्वास्थ्य को बिगाड़ने लगते हैं। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार लोग इन विनाशकारी चीज़ों को समझते हैं और पसन्द करते हैं! परन्तु आप लोग इसका प्रबन्धन कर सकते हैं। आज के इस आधुनिक युग में आप विज्ञापन दे सकते हैं तथा अन्य सभी प्रकार से लोगों को आकर्षित कर सकते हैं और बढ़ावा देने वाले इस श्रीमान अहंकार को नियंत्रित कर सकते हैं। इस प्रकार से अहं कम हो जाता है और व्यक्ति पर इसका नियंत्रण समाप्त हो जाता है। इस प्रकार बहुत से लोग इसमें खो जाते हैं। ईसा मसीह ने अपने जीवन को बलिदान किया और फिर पुनर्जीवित हो उठे। इसी प्रकार जिन लोगों ने अपने जीवन नष्ट कर लिए हैं उन्हें भी पुनरुत्थान प्राप्त करके उठना होगा। इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग नहीं है। ऐसा करना सहजयोग के माध्यम से ही सम्भव है। जब आप अपना मूल्य समझ जाएंगे तो आप सब कुछ समझ जाएंगे। अन्यथा आप अपनी आँखों से देख रहे हैं या किसी अन्य की, अपने कानों से सुन रहे हैं या अन्य के, सब बेमाने हैं। यह आपका अपना होना चाहिए। अतः स्वयं को पहचानें। जब आप स्वयं को पहचान लेंगे तो सभी कुछ बहुत अच्छी तरह से कार्यान्वित होगा। केवल ऐसे ही लोगों में से, केवल ऐसे ही लोगों की श्रेणी में से जो स्वयं को पहचान चुके हैं सहजयोग खड़ा किया जा सकता है, ऐसे लोगों में से नहीं जिन्होंने स्वयं को नहीं पहचाना।

यह बहुत लम्बा विषय है। इन दोनों विषयों पर मैं लगातार बोल सकती हूँ। परन्तु मुख्य बात तो ईसा मसीह के प्रति हमारा आभारी होना है कि उन्होंने पुनरुत्थान को कार्यान्वित किया ताकि हम विवेक बुद्धि को प्राप्त कर सके, परमेश्वरी विवेक को प्राप्त कर सकें। ये ऐसा मार्ग है, ऐसा संघर्ष है जिसका सृजन उन्होंने किया ताकि अत्यन्त आसानी से हम कठिनाई (Ordeal)

को पार कर सकें जिससे हमारे अहं और बन्धनों का अन्त हो जाए। मुझे प्रसन्नता है कि सहजयोगी इसे महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर इस बात का सम्मान होना चाहिए कि आपने अपने अहं और प्रतिअहं को देख लिया है और आप इस सबसे ऊपर उठ चुके हैं।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।

आदिशक्ति पूजा

कबेला–(3.6.2001)

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम आदिशक्ति की पूजा कर रहे हैं। मेरे विचार से यह महत्वपूर्ण पूजा है क्योंकि श्री आदिशक्ति की शक्ति ने ही आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है और इसी शक्ति ने आपको सत्य, करुणा और प्रेम की शक्ति प्रदान की है। यही शक्ति है जो सदाशिव से अलग हो गई थी क्योंकि यह स्वयं ब्रह्माण्ड सृजन करना चाहती है। ये सृजन करती हैं और प्रेम करती हैं। अपने प्रेम द्वारा ही इन्होंने ये महान सृजन किया–इस विश्व का सृजन।

इस ग्रह को विशेष रूप से चुना गया क्योंकि ये बहुत सुन्दर था। इसे रवि और राशि के मध्य में लाया गया ताकि अन्ततः इस पर मानव का सृजन किया जा सके। मानव का सृजन इनका महान कार्य है। अत्यन्त स्नेह एवं प्रेमपूर्वक और इस आशा के साथ कि उनके बच्चे सत्य का ज्ञान प्राप्त करेंगे और अन्ततः स्वयं को पहचानेंगे तथा अन्य सभी चीज़ों का ज्ञान भी प्राप्त कर लेंगे।

बाइबल में जैसा आपने पढ़ा है कि किस प्रकार आदिशक्ति ने सर्पिणी के रूप में अवतरित होकर मनुष्यों को बताया कि, "आपको ज्ञान का फल चखना होगा। ये बात उन्होंने आदम और ईव से कही। विशेष रूप से ईव को उन्होंने यह बात कही। उन्होंने ज्ञान का फल खाने की बात स्वीकार की क्योंकि जीवन की सूक्ष्मताओं को जाने बिना वो पशुओं सम रह गए होते–सम्भवतः पशुओं से थोड़ा सा ऊँचे। एक बार जब उन्होंने ज्ञान का फल चखा तो उन्हें लगने लगा कि कहीं कुछ कमी है– क्योंकि तब तक वो दोनों वस्त्रहीन थे! अतः उन्होंने पेड़ों के कुछ पत्ते तोड़े और अपने शरीर ढक लिए।

तो पहला ज्ञान जो उन्हें प्राप्त हुआ वह था पावित्र्य। उनमें श्री गणेश का स्थापन हुआ और उनके प्रभाव से उनमें चेतना जागृत हुई कि हमें अपने शरीर ढकने हैं। अब हम पशु नहीं हैं। केवल पशु ही इस तरह से रह सकते हैं क्योंकि वो दो पैरों पर खड़े नहीं होते और न ही उन्हें इस बात की चेतना होती है। पावित्र्य का ज्ञान प्राप्त करके शनैःशनैः मानव बहुत सुन्दर राष्ट्रों के रूप में विकसित होने लगे परन्तु अभी भी बहुत सी चीज़ों का ज्ञान प्राप्त करना, उनके विषय में जागरूक होना बाकी

है। आपको बहुत सी चीज़ों के विषय में ज्ञान होना चाहिए परन्तु जब तक आप आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते तब तक बाकी सब ज्ञान बिल्कुल मूल्यहीन है। केवल इस आत्मज्ञान से ही आप शक्तिशाली बनते है। प्रेम एवं करुणा ही वास्तविक शक्ति है। आज यदि आप देखें तो पूरा विश्व युद्ध में ही लगा हुआ है। सभी लोग अपनी सुरक्षा के लिए बड़े–बड़े रक्षात्मक उपकरण बनाने में जुटे हुए हैं। एक दूसरे का वध करने, एक दूसरे को नष्ट करने, स्पर्धाओं और आकांक्षाओं की पागल दौड़ में पूरा विश्व लगा हुआ है। युद्ध और महायुद्ध इसका परिणाम हैं। छोटे से ज़मीन के टुकड़े के लिए युद्ध कर रहे हैं। वे इतने मूर्ख हैं। क्या आप मृत्यु के समय अपने साथ एक चुटकी भर मिट्टी ले जा सकते हैं? जन्म के समय आपकी मुट्ठियाँ भिंची हुई होती हैं और जब आप मरते हैं तो आपके हाथ खुले हुए होते हैं। अपने साथ आप क्या ले जाते हैं? ठीक है आप अपने साथ कुछ नहीं ले जाना चाहते परन्तु जिन चीज़ों के लिए आप लड़ रहे हैं, जिन्हें आप इतना महान मानते हैं क्या आप उनका आनन्द लेते हैं? ये सभी मूर्ख लोग किस बात के लिए लड़ रहे हैं? आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी के एक टुकड़े की बात आते ही किस प्रकार आप अपनी शान्ति व सूझ–बूझ को त्याग देते हैं! इस प्रकार सभी कुछ एक गलत दिशा की ओर चल पड़ा है तथा पूर्ण विनाश की ओर जा रहा है।

जिस चीज़ ने मानव को इतना कष्ट दिया है वह है मानव की 'अज्ञानता'। इसी के कारण उसमें सारे व्यसन आए, आकर्षण आए। ये सभी आकर्षण अत्यन्त विनाशकारी हैं और एक–एक करके सभी को नष्ट कर देंगे। लोगों को विवेक अपनाना होगा और आत्मज्ञान प्राप्त करना होगा। उद्धारक व्यक्ति के पास आत्मज्ञान ही वह कुँजी (Key) है जिसे उसे लोगों को देना है। हमारे यहाँ बहुत से सन्त हुए, बहुत से सूफी हुए, ताओ लोग भी हुए, ज़ेन (Zen) भी हुए। भिन्न प्रकार के आत्मसाक्षात्कारी लोग पृथ्वी पर आए। उन सबको कष्ट उठाने पड़े, उन्हें सताया गया, किसी ने उनको नहीं समझा। परन्तु अब समय आ गया है कि आप लोग सत्य को जान लें। परन्तु सत्य जो नीरस नहीं है, सत्य जो करुणा है, सत्य जो सबको अपने में समेट लेता है, सत्य जो हमारे अस्तित्व का पूरा दृश्य दर्शाता है। इस पृथ्वी पर हम क्यों हैं? हमारा उद्देश्य क्या है? हमें क्या करना चाहिए?

आदिशक्ति की शक्तियाँ ऐसी ही हैं, प्रेम एवं करुणा की शक्तियाँ जो आपको सर्वप्रथम आत्मा का ज्ञान देती हैं। आपकी दृष्टि में प्रेम अत्यन्त सीमित है। अपने अस्तित्व की चेतना आपमें नहीं है। कल्पना करें कि आपके सम्मुख कितना महान कार्य करने को है? आत्मा के विषय में गम्भीरता पूर्वक कितना आपने जानना है? यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम आपको आत्मा को

जानना होगा। अब आपके पास आत्मा का प्रकाश है। आत्मा के इस प्रकाश में आप देख सकते हैं कि आप क्या हैं। आप ये भी देख सकते हैं कि आप किस सीमा तक जा रहे हैं, कितने गलत कार्य कर रहे हैं और स्वयं को कितनी हानि पहुँचा रहे हैं। इसे ठीक करने की, सुधारने की और अपने विवेक में लौटने की शक्ति भी आपमें है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। यह समय आपको फिर प्राप्त न होगा। **मानव के इतिहास में ऐसा समय पहले कभी नहीं आया और भविष्य में भी ये समय कभी नहीं आएगा।** यह ऐसा काल है जिसमें आपने न केवल चेतना और आत्मज्ञान को प्राप्त किया है परन्तु आप आत्मज्ञान देना भी जानते हैं। बाकी सभी सन्तों ने, ताओ और ज़ेन लोगों ने केवल इतना वर्णन किया है कि आत्मज्ञानी व्यक्ति क्या है, वह किस प्रकार व्यवहार करता है, उसकी शैली कैसी है और अन्य लोगों से वह किस प्रकार भिन्न होता है। किसी ने भी ये नहीं बताया कि आत्मज्ञानी किस प्रकार बना जा सकता है। कोई भी ये बात न कह सका, कोई भी इस कार्य को न कर सका क्योंकि संभवतः उनमें से अधिकतर लोग कुण्डलिनी के विषय में जानते ही न थे और जो जानते थे वो भी लोगों से इसके विषय में बात न कर सके।

अतः आदिशक्ति का महानतम कार्य कुण्डलिनी को आपकी त्रिकोणाकार अस्थि (Sacrum Bone) में स्थापित करना था। यह कुण्डलिनी आदिशक्ति नहीं है। आदिशक्ति तो बहुत महान चीज़ है, बहुत बड़ी चीज़ है, बहुत विशाल है, बहुत गहन है और बहुत सुदृढ़ है और कहीं अधिक शक्तिशाली है। कुण्डलिनी आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब मात्र है और जब यह उठती है तो आप जानते हैं, आपमें क्या घटित होता है और किस प्रकार आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं।

परन्तु आपको अत्यन्त सावधान होना होगा। क्या आप वास्तव में सुहृद व्यक्ति हैं या करुणामय हैं? आप यदि करुणामय हैं तो मेरे विचार से कोई भी सुहृद व्यक्ति अन्य लोगों की सहायता करेगा, उनका उद्धार करेगा। अपनी उपलब्धियों से और अपने आत्मसाक्षात्कार की अवस्था से ऐसे लोग सन्तुष्ट नहीं हो सकते, ऐसा नहीं हो सकता। आदि शक्ति को इतने सारे प्रयत्न करने की, इतना कठोर परिश्रम करने की क्या आवश्यकता थी? आप जानते हैं कि मुझे अत्यन्त कठोर परिश्रम करना पड़ा, परन्तु अपने शैशवकाल से ही मैंने कठोर परिश्रम किया है और अत्यन्त कठिन, मानवीय सूझ–बूझ के अनुसार अत्यन्त ही कठिन, परिस्थितियों में से गुज़री हूँ। **परन्तु मेरे लिए सबसे अधिक कष्टकर समय वह होता है जब मैं उन लोगों को देखती हूँ जिन्हें मैंने आत्मसाक्षात्कार दिया है और जो आत्मसाक्षात्कारी हैं फिर भी अन्य लोगों के प्रति ज़िम्मेदारी महसूस नहीं करते या ज़िम्मेदारी की**

भावना उनमें है तो वह बहुत कम है। उनमें उस वांछित करुणा एवं प्रेम का अभाव है जो आज विश्व की, मानवता की रक्षा करने के लिए, हमारे लिए आवश्यक है। यही हमारा मुख्य कार्य है। केवल मुख्य कार्य ही नहीं परन्तु हमें केवल यही कार्य करना है। अन्य चीज़ों से कुछ भी उपलब्धि न होगी। अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के लिए उन्हें ये ज्ञान देने के लिए आपको अपने व्यक्तिगत प्रयत्न करने होंगे।

ये ज्ञान समझने में अत्यन्त सुगम है। निःसन्देह यह अत्यन्त सूक्ष्म है। जैसा मैंने आपको बताया है वैज्ञानिक जिस प्रमात्रा सिद्धांत (Quantum Theory) की बात कर रहे हैं वह ये है कि उन्होंने चमत्कारिक प्रकाश लहरियाँ देखी हैं और इनके विषय में वे कुछ खोज रहे हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि कुछ सहजयोगी अन्य सहजयोगियों से ऊपर उठ जाएं। आप सबको यह जानना होगा कि आपमें यह अत्यन्त विशेष चीज़ घटित हुई है। आप चाहे हिमालय जाते, चाहे भूखों मरते, चाहे वर्षों तक परमात्मा के गुणगान करते, चाहे आप सभी प्रकार के कर्मकाण्ड या तपस्याएं करते तो भी आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ होता, आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति असम्भव होती। मैं यह जानती थी। इसलिए सारी समस्याओं, उथल–पुथल और दबावों का सामना करते हुए भी मुझे कठोर परिश्रम करना पड़ा। कार्य क्या था? केवल ये देखना कि आप सबका सृजन हो गया है। **आप सब मेरे हाथ हैं आपको कार्य करना है। हर अंगुली को कार्य करना है और यही बात मैं आपको बताती चली आ रही हूँ कि अब ये हमारी ज़िम्मेदारी है कि हमें केवल स्वयं ही सहजयोगी नहीं बनना, यह बसन्त का समय है हमें बहुत से सहजयोगी बनाने चाहिएं।**

यह आदिशक्ति का कार्य है। यह बात समझने का प्रयत्न करें। ये किसी महात्मा का कार्य नहीं, किसी अवतरण का कार्य नहीं, किसी राजनीतिज्ञ का कार्य नहीं, ये किसी बड़े नेता का भी कार्य नहीं है, यह तो आदिशक्ति का कार्य है और अत्यन्त स्पष्ट रूप से यह अपने परिणाम दर्शा रहा है। अब निर्णय आपके हाथ में है। मुझे प्रसन्न करने की आपमें उत्कट इच्छा है, ये बात मैं जानती हूँ। मैं ये जानती हूँ कि आप मुझे कितना प्रेम करते हैं और मेरे लिए क्या कुछ करना चाहते हैं। **महानतम कार्य जो आप मेरे लिए कर सकते हैं वह है सहजयोग को फैलाना।** यह अत्यन्त विशिष्ट, अत्यन्त कठिन आशीर्वाद आपको प्राप्त हो गया है। इसके लिए आपको कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ा, कोई पैसा नहीं देना पड़ा, प्रयत्न कर कर के आपको बीमार नहीं होना पड़ा। स्वतः ही ये आपको प्राप्त हो गया। परन्तु इसका ये अभिप्राय बिल्कुल भी नहीं है कि ये प्राप्त करना आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। ये आदिशक्ति का कार्य है और आदिशक्ति

का कार्य आपके जीवन में (कार–व्यवहार) में प्रकट होना चाहिए। यह तो करुणा है जिसके बदले में कुछ आशा नहीं की जा सकती। गरीब लोगों पर दया करके, गरीबों तथा अपाहिजों की देखभाल करके, लोगों ने अपने धर्म को फैलाने का प्रयत्न किया। वास्तव में सहजयोगियों को ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके करने का एक ही कार्य है वह है अन्य लोगों का अन्तर्परिवर्तन करना। ऐसी विधियाँ खोज निकालें जिनके माध्यम से आप ये अन्तर्परिवर्तन कर सकें, आदिशक्ति के संदेश को प्रसारित कर सकें। इस बात पर अपना मस्तिष्क लगाएं तो आप जान जाएंगे कि किस प्रकार आप ये प्रबन्धन कर सकते हैं।

सहजयोगी के हृदय में हर समय उत्कट इच्छा होनी चाहिए कि हमें सहजयोग प्रचार के मार्ग खोज निकालने हैं।

अन्यथा वह वैसे ही होगा जैसे ईसा–मसीह ने कहा था कि 'कुछ बीज दल–दल पर पड़े और अंकुरित हो गए, परन्तु ये कभी भी विकसित न हो पाए'। यदि आप ये जान जाएं कि आप क्या कर सकते हैं तो आप वास्तव में उन्नत हो सकते हैं और अत्यन्त विशेष और वास्तविक बन सकते हैं। निःसन्देह मेरा एक स्वप्न है और इसके विषय में मैं काफी बात करती रही हूँ। परन्तु पूजा के तुरन्त पश्चात् आप मेरी बात भूल जाते हैं। यह अच्छी बात नहीं है मैं जानती हूँ कि कुछ देश बहुत कठिन हैं। जानने का प्रयत्न करें वहाँ क्या समस्या है जो इतनी कठिन है। इसकी ओर चित्त दिया जाना चाहिए कि अन्य लोग स्वयं को नष्ट करने के लिए क्या कर रहे हैं और ये कार्य वैसे ही होना चाहिए मानो हम अन्तिम निर्णय (Last Judgement) नाम के खेल के अंग–प्रत्यंग हों। परन्तु आइए अपनी करुणा एवं प्रेम द्वारा अधिकाधिक लोगों को बचाने का प्रयत्न करें।

यह आदिशक्ति का कार्य है, किसी महात्मा या अवतरण का कार्य नहीं है। निःसन्देह वो लोग भी यहाँ हैं, सदैव हमारी सहायता करने के लिए वो हमारे साथ हैं। परन्तु आप लोगों के साथ आदिशक्ति की शक्ति है जो महान है, बहुत तीक्ष्ण है और बहुत चमत्कारिक। ये अत्यन्त प्रभावशाली है परन्तु जब तक आप अपनी शक्तियों को जान नहीं लेते किस प्रकार आप इसे कार्यान्वित कर सकते हैं? यह तो एक निर्जीव मशीन की तरह से होगा जिसमें सभी कुछ है परन्तु उसे चलाने वाला कोई नहीं। हर समय मुझे कठिनाइयों में से गुजरना पड़ता था। जिस प्रकार मेरे सम्मुख कठिनाईयाँ आ रही थीं, कई बार तो मुझे ये लगा कि मुझे एक अन्य जन्म लेना होगा। परन्तु अब आपके लिए कार्य बहुत सुगम है। वैसे ही जैसे सड़क बनाने वालों को बहुत परिश्रम करना पड़ता है परन्तु उस सड़क पर चलने वाले लोगों को इस बात का एहसास नहीं होता कि किस प्रकार आसानी से उन्हें ये सड़क चलने के लिए

मिल गई है? यदि उन्हें इस बात का एहसास हो जाए तो वे ये भी चाहेंगे कि वे इतनी सबूरी सूझबूझ और प्रेम से बनाई गई इस सड़क पर चलने का सभी लोगों को अधिकार है। वास्तव में मैं आप सभी सहजयोगीओं को विश्व परिवर्तन के लिए जी जान से कार्य करते हुए देखना चाहती हूँ। विश्व का परिवर्तन होना ही चाहिए क्योंकि आप ही लोग, कोई अन्य नहीं, संसार को बचा सकते हैं। कोई प्रधानमंत्री कोई राष्ट्रपति, कोई मंत्री न तो विश्व को परिवर्तित कर सकता है और न ही उसे बचा सकता हैं। केवल आपको यह कार्य करने का अधिकार है। आप ही में वह शक्ति है। क्या आपको अपने उच्च पद, अपने अस्तित्व का एहसास है जो इतना ऊँचा उठ गया है? अभी तक ये एहसास आपमें नहीं है। ये एहसास जब आपमें हो जाएगा तो आप अन्य लोगों के प्रति अपने प्रेम और करुणा की अभिव्यक्ति करने के लिए और उन्हें ये एहसास दिलाने के लिए कि वे क्या हैं, जी जान से लग जाएंगे। केवल सहजयोग द्वारा ही आप इस विश्व की रक्षा कर सकते हैं, कोई अन्य मार्ग नहीं है। गरीबों की, दीन–दुखियों की सहायता करने के लिए जो भी कुछ आप करते रहें सभी कुछ सतही (दिखावा मात्र) है। जिस भी व्यक्ति को आप देखें उसे आत्म–साक्षात्कार दे देना ही सर्वोत्तम कार्य है।

हमने बच्चों को देखा है वो उन्नत हो रहे हैं और वो एक दिन महान सहजयोगी बन जाएंगे। ये बात मैं देख सकती हूँ। परन्तु उनके सम्मुख आपको अपने कार्यों की अच्छाइयाँ दर्शानी होगीं। यह गतिहीन कार्य नहीं है। यह तो बहुत बड़ा आन्दोलन है जिसे विस्फोटक होना होगा। यदि ऐसे महान कदम न उठाए गए तो, मैं नहीं जानती, प्रलय का दोष किस पर आएगा। आप लोगों ने ही मानव के भाग्य को बनाना है। स्वयं को विवश एवं दुर्बल न समझें। आपमें यदि कोई विशेषता न होती तो न तो आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ होता और न ही आप मुझ तक पहुँचे होते। आप जानते हैं कि आत्मसाक्षात्कार थोंपा नहीं जा सकता, आत्म साक्षात्कार किसी पर थोंपा नहीं जा सकता। यह चेतना किसी पर थोंपी नहीं जा सकती। इस चेतना की उन्नति भी किसी पर थोंपी नहीं जा सकती। अपने अन्तस की गहराइयों में आपको वह चित्त विकसित करना होगा और स्वयं देखना होगा कि आपने क्या कार्य किया है। **अब भी यदि आप पैसे की समस्या में, धन की समस्या में व्यस्त हैं तो आप स्वयं ही एक समस्या हैं। तब आप सहजयोगी नहीं हैं। सहजयोगी तो सभी चीज़ों से ऊपर होता है और अत्यन्त शक्तिशाली होता है।** वे शक्तियाँ प्राप्त कर लेंगे। प्रेम एवं करुणा की शक्ति। ये शक्तियाँ केवल शब्द मात्र ही नहीं होंगी। ये केवल प्रेम का कार्य ही नहीं होगा, परन्तु आपको शक्तिशाली व्यक्तित्व प्राप्त हो जाएगा जो महान परमेश्वरी प्रकाश का प्रसार करेगा और

उसके माध्यम से लोगों को आकर्षित करेगा। आप सबको ऐसा बहादुर व्यक्तित्व प्राप्त करना है।

निःसन्देह लोगों में सुधार हुआ है। अन्यथा लोग मुझे लिखा करते थेः– "मेरे साथ ये समस्या है, मेरे पिताजी को ये समस्या है मेरे दादाजी को ये समस्या है, मेरी दादीजी को ये कठिनाई है, आदि आदि। अब ये बातें समाप्त हो गई हैं, मैं कहना चाहूंगी कि बहुत कम हो गई हैं। परन्तु बीमार लोगों के विषय में, असफल लोगों के विषय में और उन लोगों के विषय में जो ऐसी स्थिति में हैं जिन्हें सुधारा नहीं जा सकता, आप भूल जाएं। चित्त में परिवर्तन आना चाहिए। किसी व्यक्ति को यदि कैंसर हैं तो तुरन्त मेरे पास उसके दस फोटो आ जाएंगे। अगुआ मुझे लिखेगा, अगुआ की पत्नी मुझे लिखेगी, हर आदमी मुझे लिखेगा कि उसे ऐसा ऐसा रोग है।" क्यों? क्या ये मेरा कार्य है? व्यक्ति ठीक हो सकता है, हमारे यहाँ अस्पताल हैं फोटो (पर ध्यान करने) से वह व्यक्ति ठीक हो सकता है। परन्तु करुणा के कारण चित्त सदैव शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, आर्थिक तथा विवाह सम्बन्धों में दुखी लोगों पर भटकता है। ये आपका कार्य नहीं है न ही मेरा है। वो यदि बीमार हैं तो फोटोग्राफ (श्रीमाताजी का) लें और अपने रोग को ठीक करें। ऐसा करने पर भी यदि रोग ठीक नहीं होता तो इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति इसके योग्य नहीं है। आपको उनका इलाज करने की, इसे कार्यान्वित करने की, या असफल होने पर मुझे ये लिखने की आवश्यकता नहीं है कि फलां–फलां व्यक्ति बीमार है। कोई आवश्यकता नहीं है। इसमें इतना महत्त्वपूर्ण क्या है? चहुँ ओर बहुत से स्वस्थ लोग घूम रहे हैं। पहले उनका उपयोग क्यों नहीं करते? लोगों का इलाज करना हमारा कार्य नहीं है। स्नेह ठीक है, करुणा ठीक है। हमारे चित्त का बीमार लोगों पर गरीबों पर या दुखी लोगों पर जाना स्वाभाविक है परन्तु सहजयोग के विषय में क्या है? एक व्यक्ति यदि बीमार हो तो सौ सहजयोगी उसके पीछे पड़ जाएंगे क्या कारण है? क्या यही करुणा है? ये करुणा नहीं है। वो ये साबित करना चाहते है कि वे उस व्यक्ति को ठीक कर सकते हैं। ये करुणा नहीं है।

आज मानव को सहजी बनाना, अच्छा व्यक्ति बनाना ही करुणा है। यह आदिशक्ति का प्रेम है। जो मनुष्य उत्पन्न हुआ अन्ततः उसकी मृत्यु होनी है। निःसन्देह हमें निर्दयी नहीं होना परन्तु हमारा चित्त इस बात पर होना चाहिए कि हमने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया। ये एक आम बात है कि लोग रोगों का इलाज करने में और इस प्रकार के अन्य कार्य करने में बहुत उलझते हैं, ये ठीक है। विवाह सम्बन्धों में भी आप जानते हैं, बहुत सी समस्याएं हैं। कुछ विवाहित जोड़े अपने विवाह को नहीं चलाना चाहते, ठीक है उन्हें अलग हो जाने दो। विश्व में बहुत से लोग विवेकशील

हैं और बहुत से स्वस्थ लोग भी हैं। जो लोग एक साथ नहीं रहना चाहते और जिन्हें समस्याएं हैं उनके साथ आप कब तक संघर्ष करते रहेंगे? ये आपका कार्य नहीं है।

सर्वप्रथम तो आप आध्यात्मिक कार्यकर्त्ता हैं, आप सामाजिक कार्यकर्त्ता नहीं है। आप सामाजिक कार्य कर सकते हैं कोई बात नहीं। परन्तु आपका मुख्य कार्य तो मानव का परिवर्तन करना है। मानव में सबसे बड़ी बीमारियाँ हैं उसकी तुच्छता, क्रूरता, अन्य लोगों को कष्ट देना और क्रोध। ये सभी रोग आन्तरिक हैं, बाह्य नहीं इन रोगों को ठीक किया जा सकता है। आज इसी चीज़ की आवश्यकता है। सभी देश लड़ रहे हैं, सताए हुए हैं और हर समय नष्ट होने का भय उन पर मंडरा रहा है। इस कार्य को आप केवल आत्मसाक्षात्कार के द्वारा ही कर सकते हैं। आत्मसाक्षात्कार से क्या घटित होता है? यह बात स्पष्ट देखी जानी आवश्यक है। जब आप किसी को आत्मसाक्षात्कार देते हैं और वह इसका मूल्य समझता है, इसमें उन्नत होता है तब उसकी रक्षा होती है। पूरी तरह से आपकी रक्षा की जाती है। कौन करता है यह रक्षा। आप कह सकते हैं 'आदिशक्ति' ठीक है। परन्तु इस विश्व में एक विध्वंसक शक्ति भी कार्यरत है। आसुरी शक्ति नहीं परन्तु श्री शिव की दिव्य विनाशात्मक शक्ति। जब वो देखते हैं कि आदिशक्ति का कार्य भली–भांति चल रहा है तो वे प्रसन्न होते हैं परन्तु दूर बैठकर वे हर व्यक्ति को देख रहे हैं। सहजयोगियों के सभी कार्यों को देख रहे हैं और यदि उन्हें लगता है कि वास्तव में कुछ गड़बड़ है तो मैं उन्हें नियंत्रित नहीं कर सकती, वे नष्ट कर देते हैं। मैं उस सीमा तक नहीं जा सकती परन्तु वे तो नष्ट कर देते हैं। वे केवल एक आध को नहीं हजारों को नष्ट कर सकते हैं।

कहीं भी यदि कोई प्राकृतिक विपत्तियाँ, विपदाएं हैं जैसे भूचाल, भूकम्प या तूफान आदि तो हम कह सकते हैं कि यह श्री महादेव का कार्य है। ऐसी स्थिति में मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकती परन्तु आप यदि वास्तव में लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें तो ये चीज़ टाली जा सकती है। निःसन्देह यह आदिशक्ति की एक सनक (Whim) है कि उन्होंने विश्व का सृजन करने का, सहजयोगी बनाने का कार्य आरम्भ किया, परन्तु आपकी ज़िम्मेदारी भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप गैर ज़िम्मेदार नहीं हो सकते। हो सकता है कि मैंने इसे 'अपनी' ज़िम्मेदारी माना। परन्तु इसमें एक अन्तर है। मैंने कभी ये महसूस नहीं किया कि यह मेरी ज़िम्मेदारी है, कभी मैंने यह महसूस नहीं किया कि यह 'मेरा कार्य है' और न ही, कभी ये महसूस किया कि 'मुझे ये कार्य करना है'। मैंने ये कार्य किया। यही कार्य है आपमें भी इसी प्रकार का व्यक्तित्व होना चाहिए। अत्यन्त विनम्रता पूर्वक, अत्यन्त सुन्दर तरीके से आपको ये कार्य करना है और आप हैरान होंगे कि

किस प्रकार आपकी रक्षा की जाती है, किस प्रकार आपको सहायता पहुँचती है, किस प्रकार सभी कुछ कार्यान्वित होता है!

महानतम आनन्द तो आपको तब प्राप्त होगा जब आप महसूस करेंगे कि आप अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं, उनके जीवन परिवर्तन कर सकते हैं। ऐसा आनंद तो आपको तब भी नहीं मिलेगा जब आप बहुत बड़ी लॉटरी पा लें, बड़ी नौकरी पा लें, कोई बहुत बड़ा व्यापार कर लें या कोई बहुत बड़ा पुरस्कार पा लें। नहीं। सहजयोगी बनाने का आनन्द तो अथाह होता है, यह अत्यन्त आनन्ददायी होता है। आपमें गहन भाईचारा, एकाकारिता, आनन्द, प्रेम और करुणा का आनन्द विकसित हो उठता है यह आनन्द एक भिन्न स्तर का होता है, सर्वसाधारण आनन्द जैसा नहीं। आपको मुझसे भयभीत नहीं होना, अपने आप से भयभीत होना है। अपने पर दृष्टि रखें और अपने आप देखें कि अब तक आप क्या कर रहे थे? अब तक आपने क्या किया? अब आप ज्योतिर्मय हो चुके हैं। प्रबुद्ध लोग यदि प्रकाश नहीं दे सकते तो उस प्रकाश का क्या लाभ है? इन छोटी–छोटी मोमबत्तियों को देखिए। जितना भी थोड़ा बहुत प्रकाश इनमें है ये उसे फैला रही हैं। प्रकाश देने के लिए ये स्वयं जल रही हैं। हम यदि प्रकाश नहीं दे सकते तो हमारे साक्षात्कारी होने का क्या लाभ है। साक्षात्कारी होने का ये अभिप्राय बिल्कुल नहीं है कि साक्षात्कार केवल आप ही के लिए है। प्रेम एवं करुणा का प्रकाश जो परमेश्वरी है जो सामान्य नहीं है और न वैसा है जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है, यह परमेश्वरी प्रेम है जो कार्य करता है।

जब मैं सुनती हूँ कि सहजयोगी आजकल पैसे और धोखाधड़ी में फंस रहे है तो ये चीज़ें मुझे कुछ दुर्बल करती हैं। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि ये लोग सभी अपराधिक गतिविधियाँ कर रहे हैं। **मेरी समझ में नहीं आता, मुझे विश्वास नहीं होता। सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त करने के पश्चात् आप इतना नीचे कैसे गिर सकते है क्योंकि अभी तक आप ये नहीं महसूस कर पाए हैं कि आपने क्या पा लिया है। आपने इस बात को महसूस नहीं किया है कि आपको क्या मिल गया है और आप अपना सम्मान नहीं करते। अभी तक भी आप यदि उसी दिशा में उसी स्तर तक हैं तो मैं अवश्य कहूँगी कि न आपने मेरे साथ न्याय किया है न अपने साथ।** हमें यह कार्य करना है। अकेले मैंने ये सब कार्य किया है। मुझे कठिन परिश्रम करना पड़ा। भयानक लोगों का सामना करना पड़ा, अत्यन्त निर्दयी, स्वार्थी, एवं अत्याचारी लोगों का, परन्तु कोई बात नहीं। मैंने इतने सुन्दर पक्षी (सहजयोगी) खोज निकाले हैं परन्तु आपको अपनी गरिमा बनाए रखनी है और इसे कार्यान्वित करना है। यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि सहजयोग अत्यन्त तेज़ी से फैल रहा है और लोग

वास्तव में शान्ति, आनन्द एवं प्रसन्नता के साम्राज्य में प्रवेश कर रहे हैं। यह मेरा स्वप्न है और मुझे आशा है कि आप लोग इसे कार्यान्वित करेंगे। आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद।

परमात्मा आपको धन्य करें।

गुरु पूजा

कबेला, 8.7.2001

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप नहीं जानते कि आपकी माँ को आप लोगों को देखकर कितना हर्ष होता है, आप लोगों को जो स्वयं गुरु बन गए हैं। युग–युगांतरों से आप सत्य को खोज रहे थे और सत्य का ज्ञान प्राप्त करना चाह रहे थे। इस कठिन समय ने आपको ये बात समझा दी है कि इस विश्व में क्या हो रहा है। हमारे चहुँ ओर जो भी कुछ घटित हो रहा है वह सब गलत है और हमें इससे आगे जाना है। सत्य साधना के मार्ग पर एक चीज़ अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति को इस पर अखण्ड श्रद्धा होनी चाहिए क्योंकि इस मार्ग पर आपको अप्रत्याशित कठिनाइयों में से भी गुज़रना पड़ सकता है। साधना का आरम्भ तब होता है जब आप अपने अन्दर संघर्ष कर रहे होते हैं और बाहर भी कुछ संतोषजनक आपके सम्मुख नहीं होता। इस प्रकार साधना दुधारी है। साधना की इस स्थिति में जब आप सत्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं तो ऐसा लगता है कि यह अत्यन्त कठिन चीज़ है। परन्तु आप कुछ नहीं कर सकते क्योंकि अपने चहुँ ओर के वातावरण से आप संतुष्ट नहीं हैं।

आज विश्व भिन्न प्रकार की शैलियों से भरा हुआ है। भिन्न प्रकार की शैलियाँ प्रचलित हैं। बिना किसी कारण के लोग एक दूसरे से लड़ रहे हैं। भूमि के लिए मनुष्यों का वध कर रहे हैं। क्या भूमि मानव का सृजन कर सकती है। अत्यन्त सामूहिक रूप से ये लोग परस्पर लड़ रहे हैं और सोचते हैं कि वे मानवता की महान सेवा कर रहे हैं! आज के मानव की सोच बिल्कुल भी गहन नहीं है। यह अत्यन्त उथली है और यही कारण है कि इस विश्व में भयंकर उथल–पुथल हो रही है। हर दिन, हर क्षण आप देख सकते हैं कि मनुष्यों का वध किया जा रहा है। बहुत विशाल स्तर पर लोगों को सताया जा रहा है। पहले, निःसन्देह सन्तों को सताया जाता था। भिन्न प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचारों द्वारा, ऊँच–नीच अच्छे–बुरे के विचारों से। इन विचारों के झण्डे के नीचे ऐसे सब लोग एकत्र हो गए और पूरे विश्व भर में आक्रामकता फैला दी, सर्वत्र। केवल इतना ही नहीं परिवारों में संस्थाओं में उन्होंने आक्रामकता फैला दी, ये सोचते हुए कि वे ठीक हैं अत्यन्त अच्छे हैं, और इस प्रकार अन्य लोगों पर प्रभुत्व

जमाने का प्रयत्न किया। कुछ लोगों ने सोचा कि इसका मुकाबला करना बेहतर होगा और उन्होंने सामूहिक रूप से इसका मुकाबला आरम्भ कर दिया। परन्तु इसका कोई लाभ न हुआ। क्योंकि लड़ाई तो हत्याओं और खून खराबे को बढ़ावा देती है। इस प्रकार बहुत से लोग मारे गए। बुद्ध ने लोगों को विरोध न करने की शिक्षा दी। इतिहास बताता है कि बिहार के एक महान विश्वविद्यालय में जब आक्रान्ता आए तो आक्रमण के नाम पर उन्होंने बहुत से सन्तों का वध कर दिया। सभी सन्त मृत्यु को प्राप्त हुए। हो सकता है कि उन्होंने अत्यन्त सूक्ष्म स्तर को प्राप्त कर लिया हो या पुण्य प्राप्त कर लिए हों। परन्तु इस कलियुग में ऐसा नहीं चलेगा। विरोध क्या है? क्या ऐसे लोगों के विरुद्ध आप विरोध कर सकते हैं। किस तरह से आप लड़ सकते हैं? किसी भी व्यक्ति को ये समझा पाना असंभव स्थिति होती है कि वह आक्रामक है और सत्य के बिल्कुल भी समीप नहीं है। ऐसी बातों को कोई स्वीकार नहीं करना चाहता। अतः विश्व भर में यदि हम लोगों को ये समझाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं कि उनकी मूर्खताएं क्या हैं तो ऐसे प्रयत्न पूर्णतः असफल हो रहे हैं। इस प्रकार इसे सारे संघर्ष और युद्ध उत्तेजना से मुक्ति नही पाई जा सकती है।

हमें ये बात स्वीकार करनी होगी कि मानव अभी तक उस स्तर पर नहीं है जहाँ वह यह समझ सके कि उसमें क्या त्रुटियाँ हैं। वो ये बात नहीं करना चाहते। उनकी समझ में तो आक्रामकता ही एक मात्र तरीका है जिससे वे अपनी अच्छाई को प्रतिपादित कर सकते हैं।

तो समाधान क्या है? समाधान केवल एकमात्र है कि आप उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे दें। उन्हें चाहिए कि आत्म साक्षात्कार पा लें। केवल तभी स्थितियाँ सुधर सकेंगी। अब आप ये भी कह सकते हैं कि श्री माताजी आजकल के विरोध और संघर्ष के दिनों में, युद्ध के दिनों में ये चीज़ कार्य नहीं करेगी। परिस्थितियाँ उन्हें बताएंगी कि उनका जीवन कितना कठिन हो जाएगा। शस्त्र हमेशा उनके सिर पर लटके रहेंगे और उन्हें भी सत्य खोजना पड़ेगा। यह कार्य पूर्ण हृदय से किया जाना चाहिए। यदि वे सत्य की खोज करने लगें तो वे हैरान होंगे कि ये पूरा विश्व एक है, सारे मानव एक हैं और मानव का अन्तिम लक्ष्य यही है। परन्तु इस स्थिति तक पहुँचने के लिए बहुत से लोगों का वध होगा, बहुत से लोग नष्ट होंगे क्योंकि सुगमता से लोग पाठ नहीं पढ़ते, चीज़ों को नहीं समझते। आपका कार्य उन्हें आत्मसाक्षात्कार देना है, इस विश्व का परिवर्तन करना है। गुरु के रूप में आपको यही अच्छा कार्य करना है। परन्तु हम क्या कर रहे हैं। किस विचार को लेकर आप सहजयोग में आते हैं। बाह्य परिधि (Periphery) पर उथले–पन से हम

कार्य कर रहे हैं। सर्वप्रथम तो हम अपने विषय में चिन्तित रहते हैं कि हम वैभव किस प्रकार प्राप्त करें, धनवान किस प्रकार बने? फिर लोभ भी है। हम स्वयं को नहीं देखते कि कही हम आक्रामक तो नहीं है, लोगों को कष्ट देने का प्रयत्न तो नहीं कर रहे, क्या हमारे अन्दर बुरी धारणाएं हैं, अपने स्वार्थ के लिए किस प्रकार हम अन्य लोगों को तंग करते हैं?

तो सर्वप्रथम आपको स्वयं को शुद्ध करना होगा और अपनी समस्याओं, अपनी गलतियों को स्वीकार करना होगा। इनका सामना करना होगा और स्वयं को चुनौती देनी होगी कि तुम क्या कर रहे हो? तुम एक सहजयोगी हो किस प्रकार तुम किसी अन्य से घृणा कर सकते हो? किस प्रकार किसी अन्य को कष्ट दे सकते हो, कैसे आप किसी अन्य को कष्ट दे सकते हो? अन्तर्वलोकन का यह आरम्भ है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति वास्तविकता में ध्यान धारणा करता है और दूसरा जो मात्र ध्यान करता है उनके भेद को मैं तुरन्त पहचान सकती हूँ। आपको स्वयं को धोखा नहीं देना, स्वयं को यदि आप धोखा दे रहे हैं तो किस तरह से आप गुरु बन सकते हैं? अच्छा गुरु बनने के लिए आपको सर्वप्रथम अत्यन्त ईमानदार बनना होगा, अन्दर से ईमानदार। और ये देखना होगा कि आप क्या कर रहे हैं, आपका लक्ष्य क्या है और आपने क्या किया है?

जैसा मैंने आपको बताया आपके अन्दर षड्रिपु हैं और आप इन षड्रिपुओं को न्यायोचित ठहराते हैं। हम सोचते है कि ये ठीक हैं। मैंने फलां कार्य इस कारण से किया क्योंकि मुझे ये करना ही था। कोई कहेगा मैं गरीब था इसलिए मुझे बेईमानी करनी पड़ी, दूसरा व्यक्ति कहेगा मुझे झूठ बोलना पड़ा, कोई अन्य कहेगा मुझे चरित्रहीन होना पड़ा। ये बहुत बड़ी चीज़ है। मानव के पास अपने सभी कार्यों के लिए तर्क हैं। ये तर्क पशुओं के पास नहीं है उनके तो सीमित विचार होते हैं। परन्तु मनुष्य सभी प्रकार के बुरे कार्य कर सकता है और फिर इन्हें तर्क संगत ठहरा सकता है। तर्क संगत ठहराने की ये प्रवृत्ति आपके उत्थान में सहायक नहीं है। मैने यह कार्य इसलिए किया क्योंकि आदि–आदि। इससे कभी आपको सहायता नहीं मिलेगी। व्यक्ति को अन्तर्वलोकन करके स्वयं देखना चाहिए कि यह तर्क संगति क्या है। जब आप सभी उल्टे सीधे कार्य करने में अपने को न्यायोचित ठहराने लगते हैं तो किस प्रकार आपका उत्थान हो सकता है? किस प्रकार आप उन्नत हो सकते हैं? हर समय तो आप पतन की ओर जाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं! अतः अन्तर्शुद्धि–करण तो केवल तभी सम्भव है जब आप अत्यन्त स्पष्ट रूप से देखें। आप यदि देख नहीं सकते तो किस तरह से आप शुद्ध हो सकते हैं? मैं यदि शीशे में देख नहीं सकती तो किस प्रकार ये जान पाऊंगी कि मेरे चेहरे में क्या कमियाँ

हैं। इसलिए **जब आप सत्य को देखने लगते हैं और इससे तुलना करने लगते हैं तब स्वयं का शुद्धिकरण कर सकते हैं। परन्तु एकाकारिता सत्य से होनी चाहिए।** उदाहरण के रूप में आप शीशे में अपने चेहरे को देखें और जान लें कि क्या कमी है। ऐसी स्थिति में आप उस कमी से एकरूप नहीं हैं, आप अपने चेहरे से एकरूप हैं। इसलिए आप चेहरे को साफ कर लेते हैं, इसका शुद्धिकरण कर लेते हैं। इसी प्रकार यदि आप स्वयं से एक रूप होंगे तभी कमियों से मुक्ति पा सकेंगे। धर्मपरायणता, अच्छाई, करुणा और प्रेम के नए मार्ग पर जब आप चढ़ रहे होते हैं तो आपको स्वयं को देखना चाहिए, कि आप क्या कर रहे हैं? आप कहाँ जा रहे हैं? आप कितने मूर्ख हैं? स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। अन्य लोगों को धोखा देने दें, वो जो चाहते हैं उन्हें करने दें। उन्हें आपका वध करने का प्रयत्न करने दें, आप स्वयं आत्महत्या न करें, अपने को धोखा न दें। अतः अपने आत्मसम्मान को बनाए रखें। आपका आत्म सम्मान है जिसका सम्मान आप अन्य सभी चीज़ों से अधिक करते हैं। और शीशे में आपके रूप को बिगाड़ने वाली किसी भी चीज़ के सम्मुख आप घुटने न टेकें। **अन्तर्वलोकन पहला कदम है।**

ये अन्तर्वलोकन करने के लिए आपका प्रेम–विवेक आपकी सहायता करता है। क्या किसी दुखी व्यक्ति से आप प्रेम कर सकते हैं? क्या किसी आक्रामक व्यक्ति से आप प्रेम कर सकते हैं? तो यदि आपमें भी यही दुर्गुण होंगे, आप भी अपने साथ यदि ऐसा ही करेंगे तो आप किस प्रकार अपने को प्रेम कर सकते हैं? तो पहली चीज़ अपने प्रति शुद्ध प्रेम है, शुद्ध प्रेम। शुद्ध प्रेम करना बहुत महान चीज़ है। जैसे आप अपने सोने के लिए बहुत अच्छा बिस्तर चाहते हैं, आपको बहुत अच्छे घर पसन्द हैं, पूरे विश्व की सम्पत्ति आप अपने लिए चाहते हैं, परन्तु ये सब मिल जाने पर भी क्या आप स्वयं को प्रेम कर सकेंगे? आप यदि स्वयं को प्रेम करते हैं तो आपको कुछ नहीं चाहिए क्योंकि आप स्वयं का आनन्द लेते हैं। स्वयं का आनन्द लेना ही महानतम आनन्द है। तो अब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है अर्थात आप जान गए हैं कि आप क्या हैं? आप जान गए हैं कि आप कितनी सुन्दर चीज़ हैं। जब ये सब आप जान गए हैं तो स्वयं को प्रेम करने का प्रयत्न करें और जब आप स्वयं से प्रेम करने लगते हैं तो आप इन सब व्यर्थ की चीज़ों की चिन्ता नहीं करते। यह शुद्ध प्रेम है, सुन्दरतम वस्तु है, सुन्दरतम कार्य है जो आप स्वयं से कर सकते हैं। जब आप स्वार्थी होते हैं तो आप स्वयं से प्रेम नहीं करते। जब आप क्रूर होते हैं तब भी आप स्वयं से प्रेम नहीं करते। जब आप आक्रामक होते हैं तब भी आप स्वयं से प्रेम नहीं करते क्योंकि उस समय तो आप उन सभी दुर्गुणों से प्रेम कर रहे होते हैं। परन्तु आप स्वयं तो शुद्ध हैं।

ये ही पूर्णतः सुन्दर है, शुद्ध है और यह उन सभी चीज़ों को प्रेम करता है जो सुन्दर हैं और अछूती हैं। यह आपके आत्मसाक्षात्कार का आरम्भ है। तब आप इस बात को महसूस कर लेंगे कि आपकी आत्मा कितनी महत्वपूर्ण है। आपके अन्दर अपने प्रति कोई गलत विचार नहीं होने चाहिएं। आप स्वयं को गलत कार्यों के लिए तर्कसंगत नहीं ठहराते क्योंकि अब आप जान गए हैं कि यह आपका दुर्गुण है।

अत्यन्त ईमानदारी से अपना सामना करें और आप हैरान होंगे कि अपनी शुद्ध आत्मा को अपने अन्दर चमकते हुए देखना कितना सुन्दर अनुभव है! आत्मा जब चमकने लगती है तो आप और भी बहुत सी चीज़ें देखने लगते है जो अभी तक आपने कभी नहीं देखी थीं। इन चीज़ों में से एक यह देख पाना है कि प्रेम केवल आपके लिए न होकर सभी के लिए है। यह शुद्ध प्रेम केवल आपके लिए नहीं है, सभी अन्य लोगों के लिए भी है। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि **जब आप वास्तव में अपनी आत्मा से प्रेम करने लगते हैं तो आपका प्रेम अपने लिए होता है और इस प्रकार से आप उस प्रेम को प्रसारित करने लगते हैं** कि अत्यन्त सुन्दर रूप से आप अन्य लोगों को प्रेम करते हैं। पैसे के लिए आप प्रेम नहीं करते, किसी लाभ के लिए आप प्रेम नहीं करते, सत्ता हथियाने या लाभ उठाने के लिए आप प्रेम नहीं करते। आप तो प्रेम के लिए प्रेम करते हैं क्योंकि शुद्ध प्रेम इतना आनन्ददायी है, इतना आनन्ददायी है कि यदि ऐसी कोई बात होगी कि उस व्यक्ति को हथियाने के लिए मैं प्रेम करता हूँ या क्योंकि मैं कुछ महान चीज़ हूँ और यदि मैं किसी से प्रेम करता हूँ तो वह मेरे प्रति पूर्णतः एहसान–मन्द होना चाहिए। ऐसे विचारों का बिल्कुल कोई लाभ नहीं है। वास्तव में आप यदि प्रेम करते हैं तो प्रेम करते हैं, आप सभी को प्रेम करते हैं। आप कह सकते हैं श्री माताजी किसी धूर्त को हम किस प्रकार प्रेम कर सकते हैं? उसके रास्ते पर चलने की कोई आवश्यकता नहीं है, उसका साथ देने की कोई आवश्यकता नहीं है, उससे कोई सरोकार न रखें। आपका प्रेम यदि स्वच्छ है तो वह पुरुष या महिला परिवर्तित हो सकते हैं। यदि वे परिवर्तित नहीं होते तो आप उनकी चिन्ता छोड़ दें। प्रेम के सागर में जो प्रवेश कर गए हैं, जो लोग वास्तव में शुद्ध प्रेम करने वाले हैं वही आपके मित्र हैं। उन्हीं लोगों की इस पृथ्वी पर आवश्यकता है। धूर्त, धोखेबाज, आप पर प्रभुत्व जमाने के प्रयत्न में लगे हुए लोगों की नहीं। उन लोगों की कोई आवश्यकता नहीं है। हमें उन लोगों की आवश्यकता है जो प्रेम के पावित्र्य में पूर्णतः शराबोर हो चुके हैं।

तो प्रेम से हम पावित्र्य रूपी अगले पड़ाव तक जाते हैं। पावित्र्य विषय पर बहुत से लोगों ने बताया। उन्होंने कहा कि आपको

पवित्र होना है। आपको पूर्णतः पारदर्शी होना है ताकि लोग आपके विषय में सभी कुछ जान सकें। मेरे विचार से ये पावित्र्य नहीं है। **पावित्र्य तो वो होता है जो अन्य लोगों को भी पवित्र कर सके। आप यदि पवित्र व्यक्ति हैं तो आपके आस–पास के लोग भी पवित्र हो जाएंगे।** मान लो आपमें अपने प्रति कुछ विचार हैं। आप सोचते हैं कि सहजयोगी के रूप में आप बहुत ऊँचाई पर स्थापित हो गए हैं तथा आप प्रेम से परिपूर्ण हैं। हो सकता है ये सब आपकी कल्पना मात्र हो। क्या इससे अन्य लोग पवित्र होते हैं? आपका पावित्र्य क्या अन्य लोगों को पवित्र करता है? क्या ये उन्हें जागृति प्रदान कर सकता है? क्या वो लोग आत्मसाक्षात्कारी बन सकते हैं? और फिर उस पावित्र्य का आपकी दृष्टि में कितना सम्मान है, पावित्र्य की शक्ति का आप कितना सम्मान करते हैं, कितने लोगों को आप आत्मसाक्षात्कार देते हैं या आपने इसे केवल अपने तक ही सीमित रखा हुआ है? इस पावित्र्य को प्रसारित करने के लिए आप कितने स्थानों पर गए? पावित्र्य फैलाया जाना चाहिए और बिना किसी सन्देह के अपने पावित्र्य में रहते हुए आपको ये कार्य करना चाहिए क्योंकि यह अत्यन्त अत्यन्त शक्तिशाली चीज़ है।

पावित्र्य अत्यंत शक्तिशाली है। हो सकता है कि किन्ही एक या दो व्यक्तियों पर यह कार्य न करे, कोई बात नहीं। कुछ लोग अत्यन्त धूर्त एवं भयानक किस्म के भी हो सकते हैं। परन्तु अत्यन्त संवेदनशील व्यक्ति पर, जो सहजयोगी बनना चाहते हैं, इसका प्रभाव होगा। आपको ये चीज़ देखनी चाहिए लोग किस प्रकार आपको पसन्द करते हैं और किस प्रकार वे आपसे प्रभावित हैं। परम चैतन्य, परमेश्वरी प्रेम की सर्वव्याप्त शक्ति, आपकी ओर इसलिए बहती है क्योंकि आप लोग पवित्र हैं। आप यदि अपवित्र होंगे तो यह भिन्न चक्रों पर आकर रुक जाएगी। ये कार्य न करेगी। अतः स्वभाव का पावित्र्य, प्रेम का पावित्र्य, इसका अर्थ क्या है? यह कि आप किसी व्यक्ति से इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि उसमें आध्यात्मिकता है। आप उसे इसलिए प्रेम करते हैं कि उसमें पावित्र्य है और आप स्थान–स्थान पर जाकर पावित्र्य फैलाते हैं। पवित्र व्यक्ति कभी भी समस्याएं नहीं खड़ी करेगा। केवल अपवित्र व्यक्ति ही प्रतिदिन किसी न किसी समस्या को लेकर खड़ा होगा।

अतः योगी का चरित्र ये है कि वह अपने पावित्र्य की पूजा करे और अन्य लोगों के पावित्र्य की भी। ये सत्य है। प्रतिदिन हमें अपना सामना करना चाहिए। ये भी सत्य है प्रतिदिन हमें स्वयं को शुद्ध करना चाहिए, सुधारना चाहिए। ये बात सत्य है कि स्वयं को स्वयं से अलग करके हमें ये देखना चाहिए कि हमने कितना कार्य किया है,

हम कहाँ तक आ गए हैं और हम क्या कर रहे है?, हमने क्या किया है? अतः प्राचीन काल के गुरु और आधुनिक काल के गुरु में फर्क ये है कि प्राचीन काल के गुरु इस बात की चिन्ता न करते थे कि उन्हें लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना है। ये उनकी शैली न थी। उनमें से अधिकतर लोगों की ये शैली न थी। वो केवल अपनी चिन्ता करते थे। आराम से हिमालय की किसी कन्दरा में पागल भीड़ से दूर बैठते थे और अपना आनन्द लेते थे। परन्तु आपको यह आनन्द लोगों के साथ बाँटना होगा। मेरे विचार से अच्छे गुरु की यही निशानी है। जो व्यक्ति इस आनन्द को दूसरे लोगों के साथ बाँटता नहीं है, केवल अपने आनन्द को, अपने आश्रम को, अपने परिवार को या केवल अपने शिष्यों को ही देखता है वह अच्छा गुरु नहीं है। आपका चित्त पूरे विश्व के लिए होना चाहिए। सहजयोग अब ऐसी स्थिति तक पहुँच गया है कि अब आपको पूरी मानवता की चिन्ता करनी होगी। केवल अपने थोड़े से सहजयोगियों की या अधिक सहजयोगियों की ही चिन्ता नहीं, परन्तु सारे विश्व में जहाँ कोई भी समस्या हो उसका समाधान करना है। परन्तु पहले अपनी छोटी–छोटी समस्याओं से मुक्ति पा लें। मुझे लोगों के पत्र मिलते हैं, विशेष रूप से महिलाओं के, जिसमें वे कहती हैं मेरे पति ऐसे हैं, वैसे हैं, बच्चे कष्ट उठा रहे हैं आदि–आदि। अब आप गुरु हैं अर्थात आध्यात्मिकता की उच्चशक्ति आपमें है। इन मूर्खतापूर्ण चीज़ों की आपको क्यों चिन्ता करनी है? अब आप पवित्र हो गए है, आप पवित्र व्यक्ति हैं इस बात की चेतना ही आपको विनम्र बना देगी। परन्तु इसके विपरीत प्रायः लोगों को जब ये बात समझ आती है कि वो कुछ बन गए हैं तो उन्हें अहंकार हो जाता है और उन्हें अपनी कोई सीमा नजर नहीं आती। उनमें अगर एक शक्ति है तो वे वैसे बन जाते हैं। कोई प्रतिभा यदि उनमें हैं तो वे ऐसे बन जाते हैं। कोई महत्व यदि उनमें है तो वे उसकी तरह से बन जाते हैं। इन गुणों से वे विनम्र नहीं होते। ये उपलब्धियाँ पाकर वे अत्यन्त अत्यन्त अहंकारी, अक्खड़, और पूरी तरह से बेढ़वे बन जाते हैं। आप एक सहजयोगी हैं और आपकी पवित्रता का पतन करने वाली कोई भी चीज़ आपको स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

आप यदि चाहें तो स्वयं को गुरु कह सकते हैं। मुझे ये कहने की आवश्यकता नहीं है कि आप एक गुरु हैं परन्तु सर्वप्रथम आपको अपना शिष्य बनना होगा। सर्वप्रथम स्वयं को देखें। आपको स्वयं को देखना होगा कि मुझमें गुण हैं, क्या मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो वास्तव में यह कार्य कर सकता है? ये सारा अन्तर्वलोकन अत्यन्त शुद्ध हृदय एवं सूझ बूझ के साथ किया जाना चाहिए। आप लोग अवतरण नहीं हैं जो जन्मजात शुद्ध होते हैं। आप लोग तो मानव हैं और आप अवतरणों के स्तर तक

उन्नत हो रहे हैं। अतः आपको शुद्धीकरण करना होगा, आपको स्वयं को देखना होगा, स्वयं देखना होगा और समझना होगा कि यदि आप सहजयोगी हैं तो क्या आपमें पावित्र्य और प्रेम का सौन्दर्य है। ये प्रेम सम्बन्धित (relative) प्रेम नहीं है। ये तो पूरी तरह से एक समुद्र की तरह से है और आप उस समुद्र में तैरना पसन्द करते हैं और प्रेम के उस सागर में शराबोर रहना चाहते हैं। प्राचीन काल में गुरु उस व्यक्ति को कहते थे जो सदा डंडा उठाकर खड़ा रहता था। सभी शिष्यों को वह पीटता था। कोई भी यदि कोई गलत कार्य करता तो गुरु उसकी पिटाई करता था। संगीत में भी ऐसे गुरु हुए और भिन्न–भिन्न प्रकार के गुरु हमारे देश में हुए। उनकी विशेषता यह थी वह सदैव शिष्य को डाँटते, उसे नियंत्रित करते और तब उसे संगीत का ज्ञान देते या कुश्ती सिखाते या कुछ और सिखाते। परन्तु सहजयोग में सब कुछ बिल्कुल भिन्न है। प्राचीन काल में आध्यात्मिक गुरु भी ऐसे ही हुआ करते थे, अत्यन्त कठोर। शिष्यों पर वे पत्थर फेंकते, सभी प्रकार के दण्ड उन्हें देते परन्तु उनके मन में कोई बुराई न होती थी। उनकी ये कार्यशैली मुझे कभी पसन्द नहीं आई। एक व्यक्ति जो कि बहुत बड़ा गुरु माना जाता था उसके विषय में एक कहानी है। एक बार मैं उसे मिलने गई। मुझे काफी ऊँची पहाड़ी पर चढ़ना पड़ा क्योंकि वह ऊँची पहाड़ी पर अपनी छोटी सी गुफा में रहता था। मैं जब वहाँ पहुँची तो वह मुझसे बहुत नाराज़ था। बार–बार वह अपना सिर क्रोध से हिला रहा था। बारिश हो रही थी और मैं भीग गई थी। मैं जाकर उसकी गुफा में बैठ गई। वह आया और मुझसे पूछा श्रीमाताजी बारिश हो रही थी, प्रायः मैं वर्षा रोक देता हूँ परन्तु आज आपने मुझे वर्षा नहीं रोकने दी, क्यों? मैं उसे कह सकती थी कि तुम्हारे अहं के कारण। परन्तु मैंने ऐसा नहीं कहा, मैंने उसे अत्यन्त प्रेमपूर्वक बताया कि देखो तुम सन्यासी हो और तुम मेरे लिए एक साड़ी लाए हो। यदि मैं भीगी न होती तो एक सन्यासी से किस प्रकार वह साड़ी ले सकती? वह पिघल गया, उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और वह मेरे चरणों पर गिर गया।

तो सहजयोगी कि यही युक्ति है। क्रोध नहीं, घृणा और प्रतिरोध नहीं। विधि तो ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा आप अपने प्रेम का प्रदर्शन कर सकें। इस प्रकार व्यक्ति सहजयोगी गुरु और अन्य गुरुओं में अन्तर कर सकता है। अपने शिष्यों को पीटने की, उन्हें डाँट फटकार करने की, उन पर चिल्लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रेम अत्यन्त शक्तिशाली गुण है। निःसन्देह बहुत से लोगों पर प्रेम कार्य नहीं करता, इस बात से मैं सहमत हूँ। परन्तु उन्हें भूल जाएं। अधिकतर लोगों पर प्रेम कार्य करता है क्योंकि परमात्मा ने हमें प्रेम से बनाया है और हमारे अन्दर प्रेम के प्रति

झुक जाने की योग्यता है और उस प्रेम का आनन्द लेने की योग्यता भी है। अतः सहजयोगी को क्या करना है? उसे प्रेम की शक्ति को समझना है। प्रेम की शक्ति को यदि आप समझ सकते हैं तो यह आपके अन्दर उन्नत होगी। कुछ लोगों में ये समझ होती है और कुछ में नहीं होती। ये बात समझने का प्रयत्न करें। यह परमचैतन्य परमात्मा के प्रेम की शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है या आप कह सकते है माँ के प्रेम के अतिरिक्त परम चैतन्य कुछ भी नहीं है। ये प्रेम अत्यन्त सुन्दर तथा रहस्यमय ढंग से कार्य करता है कि आप इसे चमत्कार कहते हैं क्योंकि आप ये नहीं देख पाते कि किस प्रकार इसने कार्य किया। अतः मुख्य बात अपने अन्दर यह प्रेम संवेदना, सूझ–बूझ विकसित करना है। एक अन्य समस्या है, इसे हमेशा गलत समझा जाता है। शुद्ध प्रेम को सुगमता से समझा जा सकता है। यह आपको आनन्द प्रदान करता है, अन्य लोगों को सुधारने में सहायता देता है और अत्यन्त सूक्ष्म तरीके से कार्य करता है। आप यह स्मरण करने का प्रयत्न करें कि जब आप सहजयोग में आए थे तो किस प्रकार आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ। यह बात समझने का प्रयत्न करे कि किस प्रकार आपने उन्नत होना शुरू किया। ये तो प्रेम के बीज की तरह से है जो हमारे अन्दर अंकुरित हो गया। शनैः शनैः प्रेम के आशीर्वाद की इस फुहार को हम महसूस करने लगे, इसे समझने लगे और इसका आनन्द लेने लगे। अब इस अवस्था में जब हम गुरु बन रहे हैं या गुरु बन चुके हैं, हमें प्रेम की प्रतिमूर्ति के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं होना चाहिए। मैं आपको एक बिल्कुल अलग सिद्धांत बता रही हूँ, कोई भी गुरु इसे स्वीकार न करेगा। जिन लोगों को पहले से ही गुरु स्वीकार किया जा चुका है वे आपको अत्यन्त सूक्ष्म चीज़ों का ज्ञान देते हैं। सहजयोग में जो ज्ञान आपको मिला है उसके विषय में ये गुरु बहुत पहले आपको बता चुके हैं। किसी गुरु ने कुछ बताया तो किसी ने कुछ और परन्तु ये ज्ञान, अपने अस्तित्व के विषय में पूर्ण ज्ञान, अपने चक्रों का ज्ञान ये सब कुछ जो अब आप जानते हैं, ये बात सत्य है।

आपके अन्दर यह पूर्ण सूक्ष्म ज्ञान है जो पहले किसी को नहीं मिला क्योंकि संभवतः ये गुरु इस ज्ञान को देना ही नहीं चाहते थे या ये गुरु स्वयं को जानते ही न थे। सहजयोग का पूरा ज्ञान अत्यन्त सामान्य है अत्यन्त सूक्ष्म और सच्चा है। इस ज्ञान को अपने अन्दर प्राप्त करके आपको केवल बुद्धिवादी नहीं बने रहना चाहिए। आपका ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान है और इसे आध्यात्मिक बनाने के लिए आपको चाहिए कि आप प्रेम करें। जब आप प्रेम करते हैं तो उन पर कार्य करने लगते है। अपने ज्ञान से तब आप जान जाते हैं कि इस व्यक्ति में क्या दोष है, क्या कमी हैं कि उसका ये चक्र बाधित है, उसका ये चक्र

रुका हुआ है। इसमें फलां फलां चक्रों का सम्मिश्रण है। सहजयोगी ऐसे व्यक्ति को ठीक करने का प्रयत्न करता है उसे सुधारने का प्रयत्न करता है। ऐसा कमी नहीं कहना कि तुम बहुत खराब हो, तुम भयानक हो। नहीं, नहीं। वो इस चुनौती को स्वीकार करता है कि मेरे पवित्र प्रेम से मैं ठीक कर सकता हूँ। ऐसा करना उसके लिए अत्यन्त साधारण बात है। किसी चिकित्सक की तरह, ऐसे चिकित्सक की तरह से जिसके पास बहुत सी उपाधियाँ हों और वो आकर कहे कि मुझे इतनी फीस चाहिए आपको मुझे इतना पैसा देना होगा, नहीं। सहजयोगी जानता है कि आपमें क्या कमी है, वो ये भी जानता है इसे ठीक कैसे करना है और वह इस कार्य को करता है। अतः आप घबराते नहीं। केवल इतना ही नहीं आप उस व्यक्ति से नहीं घबराते, वह व्यक्ति भी आपसे नहीं डरता। आपके स्वभाव के कारण, आपकी प्रकृति के कारण, जिस प्रकार से आप रोगी को देख रहे हैं, जिस प्रकार से आप सत्य साधक से बातचीत करते हैं और इस प्रकार आप उस व्यक्ति को सत्य प्रदान करते हैं। आप उसे यह बताते हैं यह सिखाते हैं कि सत्य क्या है? और सत्य अत्यन्त साधारण है कि आप आत्मा हैं। यही सत्य है, यही सत्य हमने लोगों के सम्मुख प्रकट करना है। अन्य व्यक्ति को साक्षात्कार देते हुए आप स्वयं का साक्षात्कार करते हैं। आपने क्या किया, आपने उसे सत्य दिया, पूर्ण सत्य? मैं जानती हूँ आजकल सहजयोग के लिए, सहजयोग प्रसार के लिए समय निकाल पाना लोगों को कठिन लगता है। वो छुट्टियों की प्रतीक्षा करते हैं। जो भी कुछ हो रहा है जो भी कुछ घटित हो रहा है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि जो महान शक्तियाँ आपको प्राप्त हुई हैं, जो महान शक्तियाँ आपके पास हैं उनसे आप वास्तव में महान सफलता प्राप्त कर सकते हैं, अत्यन्त महान सफलता। और ये महान सफलता पूरे विश्व के मानव को बचाने के मेरे स्वप्न को साकार कर सकती है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

नव वर्ष पूजा

काल्वे–31.12.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम नव वर्ष की शुरुआत कर रहे हैं। इस अवसर पर मैं आप सबके लिए प्रसन्नता तथा वैभव से परिपूर्ण नववर्ष की मंगलकामना करती हूँ। मेरे इस देश में आप सबकी सहजयोग में गहन उन्नति हो। मेरी ये मंगल कामना है। अब आप सब लोग सहजयोगी हों और आपको सहजयोग में गुरु बनना है। सहजयोग में गुरु बनने के लिए, मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग ध्यान धारणा, अन्तर्वलोकन तथा अन्य सभी प्रकार के आवश्यक कर्म कर रहे हैं। मैं सोचती हूँ इस वर्ष में बीते हुए वर्षों की अपेक्षा आपके लिए अधिक उन्नति करने के अवसर है क्योंकि कठिनाईयों के वे वर्ष अब समाप्त हो गए हैं।

अब हम एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं या ये कहें कि अब सत्य युग स्थापित हो चुका है। आरम्भ में हो सकता है कि आपको ये महसूस न हो कि कलियुगी वातावरण को पूरी तरह से साफ कर दिया गया है। निःसन्देह शनैः शनैः आप इस शुद्धीकरण को महसूस कर लेंगे और जो लोग आपके आध्यात्मिक, राष्ट्रीय और पारिवारिक जीवन के लिए भयानक हैं उन्हें पीछे हटना होगा। वे सफल नहीं हो सकते। अब इस बात का निर्णय सहजयोगियों को करना है कि किस सीमा तक वे सहजयोग को फैलाएंगे और कितने लोगों को सहजयोग में लाएंगे। इस वर्ष बहुत से लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे और यदि आप सब लोग मिलकर इसे कार्यान्वित करने का निर्णय ले लें, तो मुझे पूर्ण विश्वास है, आपको ऐसे बहुत से लोग मिल सकते हैं जिन्हें कलियुगी अभिशाप के कारण ठगा गया। **नव वर्ष के इस दिन यह शपथ आपको लेनी है कि अब हम सहजयोग को नए, विशाल एवं अधिक गतिशील तरीके से आरम्भ करेंगे।**

इसके लिए पहली आवश्यक चीज़ है 'संघ शक्ति' अर्थात आपकी सामूहिकता। ये सामूहिकता अत्यन्त सुदृढ़, सुगठित, सूझ–बूझ पूर्ण तथा प्रेम के योग्य होनी चाहिए। सहजयोग में ऐसा होना कठिन नहीं है क्योंकि व्यवहारिक रूप से सारी ईर्ष्याएं, सारे तुच्छ विचार आपकी कुण्डलिनी ने धो दिए हैं। आपके लिए ये सारे कार्य कुण्डलिनी ने कर दिए हैं। अब आप भिन्न प्रकार के लोग हैं, अत्यन्त, अत्यन्त भिन्न प्रकार के। केवल इतना ही नहीं आपने

स्वयं को समझ लिया है। स्वयं को पहचान लिया है और जो लोग स्वयं को पहचान लेते हैं वे परस्पर झगड़ नहीं सकते क्योंकि यह 'स्व' (self) या आत्मा ही व्यक्ति का और परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। परमात्मा यदि आपके हृदय में हैं तो किस प्रकार आप लड़–झगड़ सकते हैं। आपमें यदि ये स्थिति नहीं होगी तो आप अपने बेटे से भी लड़ेंगे, ऐसा करना अत्यन्त मूर्खता होगी। अतः सारे झगड़े, सारी मूर्खतापूर्ण चीज़ें जो अब तक आप करते रहे हैं सब समाप्त हो जाएंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है। आप अत्यन्त गतिशील हो उठेंगे और अपनी गतिशीलता को देखकर आप आश्चर्य चकित हो जाएंगे। आपको तो उठना भर है। प्रकटीकरण के लिए आपको अपनी अभिव्यक्ति मात्र करनी है। आप अत्यन्त सामूहिक, प्रगतिशील बन सकते हैं और असंख्य सहजयोगी बना सकते हैं। **आपको आत्मसाक्षात्कार दिया जा चुका है। आत्मसाक्षात्कार का ज्ञान भी आपको दिया जा चुका है और आपके स्वास्थ्य एवं वैभव के लिए जो कुछ भी सम्भव था किया जा चुका है। अपने सृजनात्मक तरीकों से परमेश्वरी का ऋण चुकाना अब आपका कर्तव्य है।**

आपको अत्यन्त सृजनात्मक बनना होगा। आप देखते हैं कि विश्व में लोगों को अनगिनत समस्याएं हैं, ऐसी समस्याएं जिनसे आप मुक्त हो चुके हैं। आप उनकी सहायता कर सकते हैं। आपको किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप तो शक्ति से परिपूर्ण हैं। परमेश्वरी की शक्ति तो आपमें विद्यमान है। इस परमेश्वरी शक्ति का उपयोग किया जाना चाहिए। यह शक्ति आपको बर्बाद करने के लिए नहीं दी गई है। इसका उपयोग किया जाना चाहिए अन्यथा शक्तिशाली होने का क्या लाभ है? मान लो यहाँ पर विद्युत शक्ति है और वह प्रकाश नहीं देती तो इस विद्युत शक्ति को प्राप्त करने का क्या लाभ है? जो शक्ति आपको प्राप्त हुई है वह मानव का उद्धार करने के लिए है। यह शक्ति आपको लोगों की कुण्डलिनी जागृत करने के लिए दी गई है। यह कार्य आप कर सकते हैं। एक व्यक्ति हजारों लोगों की कुण्डलिनी जागृत कर सकता है। मुझे आशा है कि अब आप इसे अपनी ज़िम्मेदारी बना लेंगे। यह आपके लिए, सहजयोग के लिए और पूरे विश्व के लिए महानतम आशीर्वाद होगा क्योंकि पूरे विश्व को परिवर्तित करना मेरा स्वप्न है। मैं नहीं जानती अपने जीवन काल में मैं इस कार्य को कर पाऊंगी या नहीं। परन्तु आप लोग यदि पूर्ण हृदय से मेरा साथ दें तो ये कार्य हो सकता है।

सर्वप्रथम तो मैं सुनती हूँ कि बहुत से लोग ध्यान धारणा के लिए, सामूहिक ध्यान धारणा के लिए नहीं जाते। वे सामूहिक नहीं है। ये अत्यन्त आश्चर्य की बात है। इतने वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् भी, तीस वर्षों से मैं इस कार्य को करती आ रही हूँ परन्तु अब

भी लोग सहजयोग अपना अधिकार (बपौती) समझते हैं। आप अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। सामूहिक रूप से आपको ध्यान धारणा करनी होगी जहाँ भी कहीं सामूहिक ध्यान धारणा हो आपको उसमें जाना चाहिए। अपने क्षेत्रों में भी आप सामूहिक ध्यान धारणा आरम्भ कर सकते हैं यह सफल होगी। सहजयोग में आए हुए बहुत से लोग अब ध्यान धारणा करने लगे हैं। मैं उन्हें पहचान सकती हूँ। मैं जानती हूँ कि कौन ध्यान धारणा करता है और कौन नहीं करता। ये समझ लेना कठिन कार्य नहीं है। इसके अतिरिक्त आपके साथ और भी बहुत सी समस्याएं है जैसे माँ की पिता की, चाचा की आदि–आदि। इन चीज़ों की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। **आप यदि आत्म–साक्षात्कारी हैं और यदि आपका योग परमेश्वरी शक्ति से हो गया है तो आपकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी। परन्तु ऐसा नहीं होता! क्यों? क्योंकि अभी तक आप ने ये नहीं समझा कि आप क्या बन गए हैं।** देखें कि अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने से आपको क्या आनन्द प्राप्त होता है, कितना गहन आनन्द मिलता है! यह आनन्द आपको किसी अन्य कार्य में नहीं प्राप्त हो सकता, आप जो चाहे खरीदें चाहे जो आपके पास हो आत्मसाक्षात्कार देने का आनन्द अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता। इससे आप अत्यन्त प्रसन्न होंगे, इसलिए नहीं कि आप कुछ चाहते थे और वो आपको मिल गया है। ऐसी बात नहीं है। आप महान सहजयोगियों का सृजन करने के शुद्ध आनन्द से आनन्दित होंगे। परमेश्वरी आपसे यही कार्य करवाना चाहती हैं। ये नहीं कि परमेश्वरी शक्तियों का लाभ उठाते रहें कि मेरे पिता को ठीक कर दो, मेरी माँ को ठीक कर दो, मेरी बहन को ठीक कर दो। कोई कहती है मेरे पति मुझसे दुर्व्यवहार करते है या पति पत्नी में से कोई ऐसी बात करता है। इन बातों का कोई अन्त नहीं है इन्हें भूल जाएं।

आपको अपने अन्दर से गहन शक्तिशाली बनना है। आप यदि अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग नहीं करते तो आपको किस प्रकार पता चलेगा कि आपने ये शक्तियाँ प्राप्त कर ली है। ये तो इतनी साधारण बात है। जिन लोगों ने इन शक्तियों को उपयोग किया है वे मुझे बताते ही रहते हैं कि उनके साथ क्या चमत्कार हुए, क्या घटित हुआ। किस तरह से उनकी रक्षा की गई, जो कुछ भी उन्होंने चाहा उन्हें किस प्रकार प्राप्त हो गया!

परन्तु सहजयोग में आप पाखण्डी नहीं हो सकते। आपमें यदि पाखण्ड है तो सहजयोग इसे जानता है, परमात्मा इसे जानता है कि आप पाखण्डी हैं। अपने हित के लिए, अपने उत्थान के लिए आपको सहजयोग में होना है। किसी अन्य के लिए आप सहजयोग नहीं कर रहे, अपने लिए

कर रहे हैं। जब लोग इतने शक्तिशाली हो जाते हैं तो, मुझे हैरानी होती है, कितनी आसानी से वे रोगों का इलाज कर लेते हैं। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि वे ध्यान धारणा करें और अवश्य सामूहिक ध्यान धारणा में जाएं और अवश्य सामूहिक ध्यान धारणा में भाग लें। **अधिकतर लोग सामूहिकता में नहीं जाते, इस बात से मैं आश्चर्य चकित हूँ।** मैं जानती हूँ कि दिल्ली में कई बार तो सहज मन्दिर में सहजयोगियों को एक साथ बैठने की जगह नहीं होती इसलिए उन्हें दो बार आना पड़ता है या शनिवार को या इतवार को। कई सहजयोगी तो बाहर प्रतीक्षा करते हैं। कोई बात नहीं परन्तु **सामूहिक ध्यान धारणा के लिए अवश्य जाएं। आप हैरान होंगे कि वहाँ पर परमेश्वरी शक्ति बहती है, चैतन्य लहरियाँ बहती हैं, मैं स्वयं वहाँ होती हूँ। ऐसा नहीं है कि मात्र कर्मकाण्ड के लिए आप वहाँ जाते हैं। समस्या ये है कि आप लोग इस बात को महसूस नहीं करते कि आप सहजयोग के लिए जिम्मेदार हैं, अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने की जिम्मेदारी आपकी है तथा आपको ध्यान धारणा के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होना चाहिए। सामूहिक ध्यान धारणा से आप ठीक हो जाते हैं। नियमित रूप से यदि सामूहिक ध्यान धारणा में आप जाएं तो आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। इस बात का आपको मैं वचन देती हूँ परन्तु समस्या ये है कि आप जाएंगे नहीं, आप मुझे पत्र लिखेंगे कि आप मुझे मिलना चाहते हैं!** इससे कोई लाभ होने वाला नहीं। लोग आकर मुझे परेशान करते हैं और ऐसे कार्य करते रहे हैं परन्तु इसका उन्हें कोई लाभ नहीं होता। **स्वयं की सहायता करने से ही आपका लाभ हो सकता है।** आगामी वर्ष आपके लिए महान वर्ष होगा। पश्चिम में, मैं हैरान हूँ, किस प्रकार सहजयोग तेजी से फैल रहा है! रूस के लोग अत्यन्त गहन हैं, अत्यन्त गहन। एक बार यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाए तो वे इसका मूल्य समझते हैं। वे अत्यन्त गहन एवं विनम्र हैं, उन्हें कुछ नहीं चाहिए। किसी चीज़ की उन्हें इच्छा नहीं है। यद्यपि वे साम्यवाद की भयानक समस्या में से गुजरे हैं और अब उसकी प्रतिक्रिया हो रही है इस सबके बावजूद मैं इन पांचों देशों को दिव्य देश कहती हूँ क्योंकि अत्यन्त सुन्दर रूप से उन्होंने सहजयोग को स्वीकार किया है। आधुनिक मापदण्ड के अनुसार वो लोग निर्धन हैं परन्तु हृदय से वो अत्यन्त, अत्यन्त धनवान हैं। सहजयोग की समझ के कारण भी वे अत्यन्त वैभवशाली हैं। उनके वैज्ञानिक अत्यन्त कुशल हैं। हर चीज़ में वे कुशल हैं। उनका एक वैज्ञानिक भारत आया, उसने ऐसी विधियाँ खोज निकालीं जिनके द्वारा आप सभी चक्रों को, कुण्डलिनी, चक्र बाधाओं आदि सभी कुछ देख सकते हैं। कुछ चीज़ें हम आपको दिखा भी सकते हैं। दूसरी ओर हमारे भारतीय वैज्ञानिक मेरा विरोध करने में लगे

हुए है! अधजल गगरी छलकत जाए (Little knowledge is dangerous thing) वो नहीं समझते हैं कि मैं क्या कर रही हूँ और कैसे कर रही हूँ। वे तो बस मेरी आलोचना करना चाहते हैं और ये तथाकथित बुद्धिवादी भी, विशेष रूप से महाराष्ट्र के बुद्धिवादियों के मस्तिष्क में तो मैं सोचती हूँ कुछ खराबी हैं। वे सहजयोग को नहीं समझ सकते। सहजयोग उनकी समझ से परे है। उन्हें क्या हो गया है ये तो मैं नहीं जानती परन्तु वे सहजयोग को नहीं समझ सकते। सहजयोग उनकी समझ से परे है। ये महाराष्ट्र के लोग अपने कर्मकाण्डों में व्यस्त हैं। प्रातः चार बजे उठकर वे स्नान करेंगे और न जाने कैसी–कैसी पूजा आरम्भ कर देंगे! अभी कोई व्यक्ति बीमार पड़ा तो उसकी पत्नी ने मुझे लिखा कि न तो हम किसी मन्दिर जाते हैं न कोई कर्मकाण्ड करते हैं फिर भी मेरे पति बीमार पड़ गए हैं। कल्पना करें! मानो यह सब कुछ न करने से ही आप लोग सहजयोगी बन जाते हों! **आप यदि सच्चे सहजयोगी हैं तो आपको कुछ नहीं हो सकता।** परन्तु आपके मन में तो एक गलत धारणा है। आप चाहे मन्दिर जाएं या गलत स्थानों पर जाएं या किसी भी प्रकार के कर्मकाण्ड करें इनसे कभी आपको लाभ नहीं हुआ।

अतः पहले आपको स्वयं को खाली करना होगा। आप यदि इन विचारों से परिपूर्ण हैं, ये युगों पुराने विचार यदि आपके मस्तिष्क में भरे हुए हैं, उन्हें यदि आप चला रहे हैं तो परमेश्वरी विचार आपमें किस प्रकार भरे जा सकते हैं। बर्तन यदि पानी आदि किसी चीज़ से पहले ही भरा हो तो आप इसमें कुछ अन्य नहीं डाल सकते। अतः सर्वप्रथम आपको इसे खाली करना होगा स्वयं को खाली करना होगा, स्वयं को खाली करें अपने मस्तिष्क को खाली करें। यह सहजयोग के माध्यम से सम्भव है, यदि आप प्रतिक्रिया छोड़कर अपनी कुण्डलिनी को आज्ञा चक्र से ऊपर ले जाएं।

प्रतिक्रिया बहुत बुरी चीज़ है क्योंकि, जैसा मैंने उस दिन बताया था, आज्ञा चक्र से ही प्रतिक्रिया आरम्भ होती है। प्रतिक्रिया या तो आपके अहं के कारण होती है या बन्धनों के कारण। कुछ लोग अपने अहं के कारण प्रतिक्रिया करते हैं या बन्धनों के कारण। किसलिए हमें किसी चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया करनी चाहिए? बिना प्रतिक्रिया किए आप आनन्द क्यों नहीं लेते? मात्र देखें कि किस प्रकार इतने सुन्दर फूलों का सृजन किया गया है। इनका आनन्द लें। प्रतिक्रिया की क्या आवश्यकता है? कुछ लोग दोष ढूँढने में ही लगे रहते हैं। कोई कहेगा ये चीज़ नहीं होनी चाहिए थी। इन्होंने ये क्यों लगाई? सभी प्रकार की बेवकूफी भरी बातें! सृजन का आनन्द मौजूद है, आपमें ये देखने महसूस करने और इसका आनन्द लेने की योग्यता होनी चाहिए। केवल तभी आप सहजयोगी हैं अन्यथा नहीं। आप यदि प्रतिक्रिया करते हैं तो आप सहजयोगी नहीं हो सकते। सहजयोग तो एक उपाधि है।

मेरे विचार से भिन्न प्रकार के सहजयोगी हैं। कोई व्यक्ति तो मात्र ऋणात्मक (Minus) है कोई व्यक्ति धनात्मक (Plus)। कोई ऐसा है, कोई वैसा। परन्तु **सहजयोगी की गहनता तो इस बात से मापनी चाहिए कि वह किस प्रकार आनन्दित एवं प्रसन्न रहते हैं। हर समय आलोचना करते रहना, हर समय क्रोध में रहना ये सारी चीज़े चल रही हैं और व्यक्ति सोचता है कि मैं सहजयोगी हूँ।** हमारे परमेश्वरी विश्व विद्यालय में कोई डिग्री नहीं है, हम कोई प्रमाण पत्र नहीं देते। आपने यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है तो आप सहजयोगी हैं। कुण्डलिनी ने यदि आपका सहस्रार खोल दिया है तो आप सहजयोगी हैं। परन्तु ये आवश्यक नहीं कि ऐसा सहजयोगी सच्चा सहजयोगी हो। यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि आप कितने आनन्द में हैं और अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के आप कितने इच्छुक हैं। आत्मसाक्षात्कार का आनन्द क्या आप अन्य लोगों के साथ बाँटना चाहते हैं? इसे अपने तक सीमित नहीं रखना चाहते। यदि आपकी स्थिति ऐसी नहीं है तो अभी तक आप पूर्ण सहजयोगी नहीं हैं। आप ये पता लगाएं कि आपने कितने लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया? ऐसा करना बहुत आवश्यक है क्योंकि आगामी वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण होगा, बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष। इस वर्ष में मैं चाहूंगी कि आप सब लोग चहुँ ओर जाकर आत्मसाक्षात्कार दें।

मैंने देखा है कि सभी कुगुरुओं का एक–एक करके पर्दाफाश हो रहा है। कहीं भी आप इनसे मिलें और इनका दृष्टिकोण देखें:– एक बार मैं हवाई जहाज़ में यात्रा कर रही थी। मेरी साथ वाली सीट पर एक महिला बैठी हुई थी। उसकी लहरियाँ इतनी गर्म थीं कि मैंने उससे पूछा कि तुम कौन से गुरु की शिष्या हो? उसने मुझे नाम बताया और कहने लगी वो गुरु बहुत अच्छा है ये गुरु सर्वोत्तम है, ये है, वो है! उसके शरीर से इतनी गर्मी निकल रही थी! परन्तु मैं हैरान थी कि किस प्रकार ये महिला इतने गर्व पूर्वक अपने गुरु की बात कर रही थी। ये गुरु बहुत बुरा आदमी है पर बिना मुझे जाने पहचाने एक अजनबी से वह बोले जा रही थी! परन्तु सहजयोगी बात ही नहीं करते। आपको चाहिए कि अपने पड़ोसियों से आस–पास के लोगों से सहजयोग की बात करें।

जैसे भारत में बहुत से वार त्यौहार हैं जिनमें हम लोगों से मिलते हैं, जैसे महाराष्ट्र में हम लोग हल्दी और कुमकुम की रस्म करते हैं। हल्दी और कुमकुम के लिए आई हुई महिलाओं से सहजयोग की बात बिल्कुल नहीं करते। उनके पास मेरा फोटो तक नहीं है! यदि वो चाहें तो ये कार्य कर सकते हैं। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें किस चीज़ की घबराहट है। ये बहुत अच्छा अवसर है। जब भी कोई रात्रि भोज हो, कोई जन सभा हो, आप सहजयोग

की बात करें। परन्तु लोग सहजयोग के बारे में नहीं बताते। हैरानी की बात है कि वे सहजयोग की बात नहीं करना चाहते, ये नहीं बताना चाहते कि हमें सहजयोग के माध्यम से ये प्राप्त हुआ है। तो सहजयोग किस प्रकार फैलेगा? ये बात सबको समझनी है। आप सबको ये देखना है कि लोगों को सहजयोग में लाने के लिए आप क्यों ज़िम्मेदार हैं। निःसन्देह आप सबको सुरक्षा प्रदान की गई है आप सब आशीर्वादित हैं। सबकी कामनाएं पूर्ण हो गई हैं, अधिकतर कामनाएं। परन्तु कितने लोग इस ऋण को चुका रहे हैं? अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने के लिए कितने लोग कार्य कर रहे हैं? **सहजयोग आप पर एक ऋण है। परन्तु यदि आपका चित्त अस्थिर (Haphazard) है, चित्त यदि स्वच्छ नहीं है, निर्मल नहीं है तो आप सभी प्रकार से भौतिक अष्टभुज (Octopus) के जाल में फँसे रहते हैं।** आप स्वयं ही अष्टभुज सम बन जाते हैं और हर मामलें में उस के जाल में उलझते चले जाते है। आपको स्वतंत्र पक्षी सम होना चाहिए। ये सारे मोह आपको कहीं भी नहीं पहुँचाएंगे।

आपकी आसक्ति केवल सहजयोग से होनी चाहिए और इस बात के प्रति चेतन होना चाहिए कि आप स्वयं को पहचान चुके हैं। अपना मूल्य, अपना स्तर आप जान सकते हैं। **मैं आपको बताती हूँ कि हम पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं।** आपके देश की संस्कृति बहुत अच्छी है मैंने अमरीका तथा अन्य स्थानों की समस्याएं देखी हैं। ये समस्याएं हमारे यहाँ इतनी अधिक व्याप्त नहीं है। आपको केवल इतना समझना है कि आप सहजयोगी हैं। एक वृक्ष की तरह। वृक्ष जब बढ़ता है तो ये जानता है कि ये वृक्ष है। वृक्ष को इस बात का ज्ञान होता है कि उसे फल उगाने हैं, बिना किसी लक्ष्य के इसका विकास नहीं हुआ। सूखी छड़ी की तरह से खड़े होने के लिए इसे नहीं उगाया गया। नहीं। इसे कुछ करना है। इस विश्व में हर चीज़ का कोई न कोई कार्य है। तो क्या सहजयोगियों का कोई कार्य नहीं? इतनी दुर्लभ घटना घटित हुई है कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। तो हमें अपने चित्त को इधर–उधर नष्ट क्यों करना चाहिए? क्यों? हमें उन्नत होना है। हम भिन्न लोग हैं, हमारे तौर तरीके बिल्कुल भिन्न हैं। विश्व में हम ही साक्षात्कारी लोग हैं। वास्तव में ईसा–मसीह के समय में कोई भी आत्म–साक्षात्कारी न था और न ही उनसे पूर्व कोई था। मैं हैरान थी कि चीन तथा अन्य स्थानों पर एक समय में एक गुरु की आवश्यकता थी, परन्तु आप लोग बहुत बड़ी संख्या में गुरु है। परन्तु आप गुरु रूप में अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं करना चाहते। महिलाएं भी इसका उपयोग क्यों नहीं करती? मैं देखती हूँ कि सहजयोग में महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक अकर्मण्य हैं। उन्हें ये समझना चाहिए कि मैं स्वयं एक महिला हूँ। अकेले मैंने ये सारा

कार्य किया है। आप ये कार्य क्यों नहीं कर सकतीं? विश्व भर के लोगों का हृदय परिवर्तन करना अत्यन्त कठिन कार्य है, परन्तु आपके लिए ये अत्यन्त सहज है। मैं यदि इस कार्य को करती हूँ तो आप क्यों नहीं कर सकतीं? अपना पूर्ण चित्त इसको दें कि हम सहजयोग को केवल अपने लिए कार्यान्वित न करके मानवता के हित के लिए कार्यान्वित करेंगे। इस बात की हमें सख्त जरूरत है।

यदि आप केवल अपने और अपने परिवार के विषय में सोचते हैं तो आपकी करुणा, आपका प्रेम सभी कुछ व्यर्थ है। इसका कोई लाभ नहीं। ऐसा आत्मसाक्षात्कार से पूर्व भी सभी लोग करते हैं। तो अपने परिवार से तथा अन्य चीज़ों से आसक्त होने का क्या लाभ है? अन्य चीज़ों और पूरे विश्व से हमे जुड़ना है। हम पूरे विश्व से सम्बन्धित हैं। अब आप व्यक्तिवादी नहीं हैं। जैसा मैंने कहा कि बूँद अब सागर बन गई है। समुद्र से अपना तदात्म्य करें। आपने यदि देखा हो तो समुद्र का स्तर निम्नतम होता है। इतना निम्न कि शून्य बिन्दू समुद्र से आरम्भ होता है। सागर इतना विनम्र है। इसका स्तर निम्नतम है परन्तु फिर भी सभी नदियाँ आकर इसमें गिरती हैं! समुद्र स्वयं सूखकर आकाश में बादलों का सृजन करता है और वहाँ पर बादल वर्षा बनकर फिर उसी समुद्र में गिरते हैं। अतः जो लोग विनम्र होंगे उनकी ओर अधिक सहजयोगी आकर्षित होंगे, और जो लोग अधिक करुणामय होते हैं उनक ओर भी अधिक सहजयोगी आकर्षित होते हैं। अपने इस स्वभाव का परिवर्तन करना बहुत आवश्यक है। आप यदि आडंबर करने का प्रयत्न करेंगे तो कोई भी आपसे प्रभावित न होगा। आप यदि स्वयं को बहुत बड़ी चीज़ मानते हैं तो कोई आपको देखेगा भी नहीं। अत्यन्त विनम्र करुणामय व उदार बनें और अत्यन्त आनन्दमय भी। **कल्पना करें, सहजयोगी कुछ लोगों के साथ जा रहा हो और वह हमसे कहे मेरे माताजी बीमार हैं, मेरे पिताजी मरने वाले हैं, ऐसा घटित हो रहा परन्तु मैं सहजयोग कर रहा हूँ! तो लोग कहेंगे, "आप सहजयोग किसलिए कर रहे हो? आप उनके पास बैठें और रोएं बिलबिलाएं। वह यदि वास्तव में सहजयोग कर रहा है तो कोई बीमारी आ नहीं सकती। कोई कठिनाई नहीं आ सकती। यह सच्चाई है।** समझने का प्रयत्न करें, केवल आपके ही कारण जो लोग वहाँ है उनका उत्थान होगा। परन्तु जो लोग सहजयोगी नहीं है उनके साथ तादात्म्य करने का कोई लाभ नहीं है। वो चाहे आपके सम्बन्धी हों, जो चाहे हों, कोई लाभ नहीं है क्योंकि आपका स्तर भिन्न है और उनका भिन्न है। या तो उनका स्तर उठाने का प्रयत्न करें या उनसे कोई सम्बन्ध न रखें। वो तो आपको भी पतन की ओर खींच लेंगे। वो आपकी बुलन्दी को नहीं देखेंगे क्योंकि देखने के लिए उनके

पास आँखें ही नही हैं, सुनने के लिए कान नहीं हैं और समझने के लिए संवेदना नहीं है। उन्होंने यदि आपमें हुआ परिवर्तन देखा होता तो वे सिर के भार सहजयोग में आ जाते। यदि वो नहीं आते तो यह आपका काम नहीं है। आपने उनकी चिन्ता नहीं करनी। वो यदि सहजयोग में आते हैं तो ठीक है अन्यथा वो आपके सम्बन्धी नहीं हैं। किसी भी प्रकार से वे आपके सम्बन्धी नहीं है। किस प्रकार आप उन्हें सहजयोग समझाएंगे? किसी भी चीज़ की व्याख्या आप उनके सम्मुख कैसे करेंगे उन लोगों से बातचीत कर पाना असम्भव होगा।

अतः आज मुझे आप सबको बताना है कि हमारा सहजयोग परिवार अत्यन्त विशाल है। 86 देशों में यह फैल रहा है और बहुत अच्छा चल रहा है। हमें केवल इतना देखना है कि आप उसी महान सहजयोग परिवार रूपी समुद्र से सम्बन्धित हैं। परन्तु आपने ही इसका आगे विस्तार करना है। इसके बारे में आपने उनका हृदय परिवर्तन करना है। ये आपकी ज़िम्मेदारी है। बिना किसी कारण के आपको सहजयोग नहीं दिया गया। आपको महान सहजयोगी, बेहतर सहजयोगी बनना है। इसके लिए आप स्वयं ध्यान धारणा करें। केवल ध्यान धारणा ही न करें, जहाँ तक सम्भव हो सामूहिक कार्यक्रमों में भी भाग लें। मुझे प्रसन्नता है कि आप लोग भारत मे रुके रहे और इस पूजा में पहुँचे। खूब बारिश हुई फिर भी आप लोग यहाँ हैं और परमात्मा के आशीष का आनन्द उठा रहे हैं। मैं हृदय से बार–बार आपको आशीर्वाद देती हूँ और कामना करती हूँ कि आपमें शुद्ध इच्छा हो कि आप केवल स्वयं ही सहजयोगी न बनें अन्य लोगों को भी सहजयोगी बनाएं। यह आप ही की शुद्ध इच्छा है। आपने चाहे इसे पहचाना न हो परन्तु जब तक आप इस इच्छा को पूर्ण नहीं कर लेते आप अच्छे सहजयोगी नहीं बन सकते। शुद्ध इच्छा कि हर प्रकार से, सर्वत्र, सबमें सहजयोग को फैलाना है। सहजयोग अच्छी तरह से फैलेगा तो बहुत से लोगों की रक्षा की जा सकेगी, बहुत से लोग जो माया के जाल में फँसे हुए हैं वो उचित मार्ग पर लौट आएंगे। आप उनके लिए क्या कुछ कर सकते है इस बात को सोचें? यदि मैं अकेली इतने सारे सहजयोगी बना सकती हूँ तो आप लोग भी क्यों नहीं प्रयत्न करते और बहुत से सहजयोगी बनाते? इस विश्व का अभिप्राय ही सहजयोग है। समाचार पत्रों में जब मैं कोई समस्याएं देखती हूँ तो सोचती हूँ 'हे परमात्मा, यदि ये लोग सहजयोगी होते तो ये समस्याएं न होतीं'। परन्तु अब भी मैं लोगों को इधर–उधर भटकते हुए देखती हूँ। मैं नहीं जानती कि उनके पास मस्तिष्क हैं भी या नहीं? विश्व कहाँ जा रहा है और कौन इसकी रक्षा करेगा?

मैं यहाँ पर आपको यह बताने के लिए नहीं हूँ कि आपको अपने निजी जीवन में क्या करना चाहिए। परन्तु आपको स्वयं इस बात का ज्ञान होना चाहिए। आपको

अत्यन्त स्वच्छ एवं सुन्दर (आन्तरिक रूप से) होना चाहिए। स्वयं के साथ आपने क्या करना है? कुछ लोग इतने उथले हैं कि आप उनके साथ नहीं चल सकते। सहजयोग उनके भेजे में नहीं जाता, वो इतने उथले हैं। अतः उन्हें भूल जाएं। मैं नहीं सोचती कि उनकी रक्षा की जा सकेगी। अतः उन्हें भूल जाओ, वे आनन्द नहीं ले सकते। सदैव वो किसी व्यर्थ की चीज़ की चिन्ता में लगे रहते हैं। तो ऐसे लोगों के साथ आपको नहीं चलना चाहिए। परन्तु अब भी ऐसे लोग हैं मेरे विचार में 80 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो जिज्ञासु हैं, उन्हें आप सहजयोग दें।

आपकी माँ की केवल एक यही इच्छा है कि अब आप सहजयोग की ज़िम्मेदारी अपने कन्धों पर ले लें और सबको बताते चले जाएं। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि मुझे तुच्छ लोकप्रियता नहीं चाहिए। मैं तो ये चाहती हूँ कि चारों तरफ सहजयोगी हों।

परमात्मा आपको धन्य करें।

गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण अडवानी, सहज योग स्टाल, दिल्ली पुस्तक मेला, 2001 में पधारे

रॉयल एलबर्ट हॉल, लंदन–सार्वजनिक कार्यक्रम, 14.7.2001